 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही ५४३
वर्ष ५ अंक ४ दिसंबर 2011

संपादक : सिमरजीत सिंह *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंह *एम. एम. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सलोक मः ५ ॥
पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥
मः५॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥
जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥२॥
मः५॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥
भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥
पउड़ी ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥
सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥
भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥
करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥
रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥
गहिर गंभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥
सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥
तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥ *(पन्ना ११०२)*

श्री गुरु अरजन देव जी 'मारू वार महला ५' के शीर्षक वाली इस वार के उपरोक्त सलोक तथा पउड़ी में फरमान करते हैं कि मनुष्य अपनी हउमै को त्याग कर ही परमात्मा के निकट हो सकता है। गुरु जी कहते हैं कि हे जीव! पहले अपने अहंकार को मार तथा अहंकारग्रस्त जीवन से लगाव कम कर; सभी के चरणों की धूल बन जा अर्थात् अति विनम्र-भाव वाला बन जा तभी तुझे परमात्मा की निकटता प्राप्त होगी। आगे गुरु जी कहते हैं कि उसी मनुष्य को आत्मिक रूप से जिंदा समझो जिसने अपने मन की सांसारिक तृष्णाओं को खत्म कर लिया है। इस संसार के हर रंग में डूब जाने वाले मनुष्य आत्मिक मृत्यु मर जाते हैं। वही मनुष्य श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं जिनका प्यार एक (परमात्मा) के साथ है। आगे गुरु जी का कथन है कि जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम सदा बसता है उनके निकट कोई दुख-कलेश नहीं आता; माया रूपी भूख-प्यास का उस मनुष्य को एहसास नहीं होता तथा यम (मृत्यु) का डर भी उसके पास नहीं फटकता। पउड़ी में गुरु जी फरमान करते हैं कि हे सदा स्थिर रहने वाले पातशाह! तेरी कीमत कही नहीं जा सकती। साधना करने वाले सिध, योग करने वाले योगी, ज्ञान-चर्चा करने वाले तथा ध्यान लगाने वाले, इनमें से कौन हैं जो तेरी कीमत पा सकें? अर्थात् कोई नहीं। सारी सृष्टि को पैदा करने वाला तथा उसका नाश करने वाला भी परमात्मा ही है। वो सब कुछ करने के योग्य है और वही सभी में बोल रहा है। हरेक मनुष्य की जीविका का प्रबंध वही करता है। मनुष्य तो व्यर्थ में घबराता है। हे प्रभु! तू बड़ा गंभीर है, सियाना है, तेरे गुणों का मूल्य नहीं लगाया जा सकता। मनुष्य वही कार्य करता है जो उसके अंदर प्रभु ने उसके पूर्व किये कर्मों के अनुसार संस्कार रूप में भर दिए हैं। हे प्रभु! तुझसे बाहर कुछ नहीं है, अतः मैं तेरी प्रशंसा करता हूं। 



आओ! शहीदों की आशीष प्राप्त करें

भारत देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भोली-भाली जनता हाकिमों के जुल्म से त्राहि-त्राहि कर रही थी। किसी को कोई रास्ता दिखाई नहीं आ रहा था। श्री गुरु नानक देव जी ने जनता को जागृत करने के लिए लामबंद किया, जनसाधारण में जागृति पैदा की। उन्होंने जनसाधारण को जात-पात, ऊंच-नीच, स्त्री-पुरुष का भेदभाव जैसी हर प्रकार की गुलामी की जंजीरें तोड़ने की प्रेरणा की। जनसाधारण को नाम जपो, किरत करो एवं वंड छको का उपदेश देकर एक मंच पर इकट्ठा किया। गुरु जी को हाकिमों के जुल्म के विरुद्ध आजादी की आवाज उठाते हुए बाबर के कारावास में चक्की भी चलानी पड़ी। दूसरे गुरु साहिबान द्वारा भी अपने-अपने समय इसी विचारधारा पर डटकर पहरा दिया गया, इसलिए उन्हें कई तरह की अकह एवं असह यातनायें भी झेलनी पड़ीं। पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठकर शहीदी प्राप्त करनी पड़ी। नवम पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में शहादत देनी पड़ी। सिक्ख गुरु साहिबान जहां जब्र-जुल्म की जड़ें उखाड़ने के लिए शहीदियां प्राप्त कर रहे थे वहां हाकिम जनता को धमकाने के लिए एक-दूसरे से बढ़कर जुल्म कर रहे थे।

इसी शृंखला को आगे चलाते हुए साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना सारा परिवार वार दिया। चमकौर साहिब की जंग में बहुत बड़ी जालिम फौज से जूझते हुए साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा साहिबजादा बाबा जुझार सिंघ जी हक-सच के लिए शहीदी प्राप्त कर गये। वृद्ध अवस्था में माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादे--बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतह सिंघ जी को बाल्य अवस्था में घोर यातनायें देकर सरहिंद में शहीद कर दिया। वजीर खां का यह अति घिनौना कार्य मुगल राज्य की गुलामी से आजादी के संघर्ष के लिए रास्ता सपाट कर गया।

दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सदैव आजाद सुपुत्रों (खालसा) के लिए अपने चारों साहिबजादों, माता गुजरी जी को कुर्बान कर दिया, हमारे लिए आजादी के चिन्ह **'संत-सिपाही'** की वर्दी की बख्शिश की, हमें सदा के लिए सच्ची-सुच्ची गुरबाणी की शिक्षा के साथ जोड़ दिया, हर तरह की गुलामी से युगों-युगांतरों तक छुटकारा दिला दिया।

आज हम अपने महान शहीदों की कुर्बानी को भुलाकर गुलामी की जंजीरों में फिर अपना सिर जान-बूझकर फंसा रहे हैं; अपनी अलग आजाद आभा को खो रहे हैं; नशों के गुलाम हो रहे हैं; सच्चे गुरु को छोड़कर तथाकथित संतों की गुलामी के लिए तत्पर हुए फिरते हैं। सुबह का भूला शाम को घर वापिस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। आओ! अपनी विरासत से सदा जुड़े रहने का प्रण करें तथा अपनी आजाद हस्ती का डंका सारे संसार में बजाकर अपने शहीदों का गौरव बढ़ायें; उनकी आशीष प्राप्त करें!



महान व्यक्तित्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. भगवंत सिंघ**

दुनिया के महापुरुषों, योद्धाओं और शूरवीरों के जीवन का अध्ययन करने के लिए तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सभ्याचारक परिस्थितियों का गंभीर चिंतन करना बहुत जरूरी है। समकालीन परिस्थितियां किसी भी व्यक्तित्व के निर्माण पर पूरा प्रभाव डालती हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म के समय दिल्ली के तख्त पर महीउद्दीन औरंगजेब विराजमान था, जिसने 'आलमगीर' अर्थात् 'संसार-विजयी' का उपनाम धारण किया हुआ था। मुगल सलतनत के ताकतवर हो जाने के कारण भारत में श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही हिंदुओं के हौंसले पस्त हो चुके थे। भारत की धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था विदेशी ताकत के दबाव तले आ चुकी थी। राज-सत्ता आम लोगों की धार्मिक रस्मों में दखलंदाजी कर रही थी। प्रमाण है :

--खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
स्रिसट सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ *(पन्ना ६६३)*

--गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥
(पन्ना ४७१)

अपने गौरवशाली विरसे को भूलकर बहुत ही बुरी हालत से गुजर रहे हिंदू समाज में समय की हकूमत के जब्र-जुल्म के विरुद्ध आवाज उठाने की शक्ति नहीं थी। समय की राजसी हालत में बादशाह औरंगजेब, जिसने अपने भाइयों का कत्ल करवाकर, पिता को कैद करके तख्त हासिल किया था, ने अपनी राजसी सत्ता का दबदबा बिठाने के लिए प्रजा, खासकर हिंदुओं पर जुल्म ढाने शुरू कर दिये थे। मुहम्मद लतीफ के अनुसार, "उसने हिंदू मंदिरों की बर्बादी करके मूर्ति-पूजा बंद करवा दी, हिंदू तीर्थ-मेले बंद करवा दिए तथा हिंदुओं को सरकारी नौकरियों से जवाब दे दिया गया।

सन् १६९० ई में बादशाह ने शाही ऐलान जारी किया, जिसके द्वारा हिंदुओं को पालकियों में सवार होने और अरबी घोड़ों पर चढ़ने की मनाही की गई। जितने हिंदू सरकारी नौकर थे सबको हुक्म दिया गया कि वे इसलाम धर्म धारण कर लें वरना उन्हें नौकरी से जवाब दे दिया जाएगा। जिन्होंने मुस्लिम बनना प्रवान न किया उन्हें सरकारी नौकरी से बर्खास्त किया गया। औरंगजेब ने अपने सारे राज्य में हिंदुओं पर हिंदू होने का जजिया अर्थात् टैक्स नए सिरे से जारी कर दिया। योगियों-सन्यासियों को भारी गिनती में देश-निकाला दे दिया। बेशक मुस्लिम धर्म के लिए उसका जज्बा सच्चा मालूम होता है मगर हिंदुओं के विरुद्ध उसके तुअस्सब पर

**संपादक, जन साहित, मासिक, भाषा विभाग भवन, शेरां वाला गेट, पटियाला-१४७००१, मो : ९८१४८५१५००*

पक्षपात ने अलग-अलग निवासों में धार्मिक वैर को जन्म दिया।" *(पंजाब का इतिहास, पृष्ठ ३२८-२९)*

हिंदोस्तान के ऐसे हालातों में २६ दिसंबर, १६६६ ई को पटना साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के घर माता गुजरी जी की कोख से श्री गोबिंद राय जी का जन्म हुआ। श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस समय ढाका में थे। ढाका से वापसी पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब पटना होते हुए अनंदपुर साहिब में आ विराजे। अनंदपुर साहिब के पहाड़ी और रमणीय स्थान में श्री गोबिंद राय जी का बचपन गुजर रहा था। पंडित किरपा राम जो श्री गोबिंद राय जी को संस्कृत पढ़ाता था, की अगुआई में कशमीरी पंडितों का एक प्रतिनिधि-मंडल श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में बादशाह के जुल्म के विरुद्ध फरियाद लेकर पहुंचा। गुरु जी ने उनके दुखों को बहुत हमदर्दी से सुना। कशमीरी पंडितों के साथ गुरु जी की इस बैठक की खबर बादशाह के पास पहुंच गई। उसने गुरु जी की गिरफ्तारी का फरमान जारी कर दिए। प्रिं: तेजा सिंघ ने 'सिक्ख इतिहास' में स्पष्ट किया है कि गुरु जी को रोपड़ के नजदीक गांव मलकपुर रंगड़ा से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने भट्ट वही मुलतानी, सिंधी, खाता बलाउतों के हवाले से लिखा है कि गुरु साहिब को गिरफ्तार करके सरहिंद में रखा गया। बादशाह के अगले हुक्म के अनुसार गुरु जी को दिल्ली में ले जाकर नवंबर, १६७५ में शहीद कर दिया गया।

सोचने की बात है कि जब भाई जैता जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीश लेकर अनंदपुर साहिब पहुंचे तब नौ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद राय जी के मन पर क्या गुजरी होगी! एक तरफ शक्ति-सम्पन्न मुगल राज्य-सत्ता का जब्र-जुल्म, दूसरी तरफ लूटी और पिसी जा रही जनता। उस समय गुरु जी ने स्वाभिमान से विहीन हो चुकी जनता को जगाकर जाबिर राज्य-सत्ता के जुल्म से टक्कर लेने का संकल्प लिया होगा। उन्होंने भाई जैता जी को गले से लगाकर कहा--"रंघरेटा, गुरु का बेटा।"

गुरु साहिब ने इसी संकल्प को अमली जामा पहनाने का निश्चय कर लिया। उन्होंने शस्त्र-शिक्षा के साथ-साथ साहित्यिक, सभ्याचारक और पहनावे की विलक्षणता पर बल देने का काम किया। उन्होंने निश्चय कर लिया कि सिक्खों की अलग पहचान बनाएंगे। उन्होंने अनंदपुर साहिब में किले बनवाए और अपने सेवकों से बढ़िया घोड़ों व शस्त्रों की मांग की। वहां युद्ध संबंधी नित्य अभ्यास करवाए जाते थे।

१६९९ ई को अनंदपुर साहिब में गुरु जी ने एक विशाल जनसमूह एकत्रित किया। इस समूह का अंदाजा अस्सी हजार के लगभग लगाया जाता है। लोगों के बैठने पर गुरु जी ने अपनी कृपाण निकाल कर कहा कि यहां कोई ऐसा व्यक्ति है जो धर्म की खातिर अपनी जान न्यौछावर करने के लिए तैयार हो? यह सुनकर सारे समूह में एकदम सन्नाटा छा गया। गुरु जी ने यह मांग तीन बार दोहराई। तीसरी बार की आवाज पर लाहौर का भाई दयाराम अपनी जगह से उठा। उसने हाथ जोड़कर अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। गुरु जी उसे पास के एक तंबू में ले गए। खून से सनी और टपकती कृपाण हाथ में हिलाते हुए गुरु जी उस एकत्र जनसमूह के सामने फिर आए और कहा, "क्या यहां कोई और सिक्ख है जो अपनी कुर्बानी देगा?" यह सुनकर दिल्ली (हस्तिनापुर)

का भाई धरमदास आगे आया। उसको भी गुरु जी उसी तंबू में ले गए। इसी तरह तीन और सिक्ख एक-दूसरे के बाद खड़े हुए और उन्होंने अपने आप को कुर्बानी के लिए पेश किया। उनमें से एक भाई मोहकमचंद द्वारिका का, दूसरा भाई साहिब चंद बिदर का था तथा तीसरा भाई हिम्मत राय द्वारिका का था। गुरु साहिब ने इन पांचों को सुंदर पोशाकें पहनाकर एकत्र जनसमूह के सामने पेश किया। उन्होंने इन सिक्खों को खंडे से तैयार किया अमृत छकाया और उन्हें 'पंज पिआरे' (पांच प्यारे) नाम दिया। इसके बाद उन्होंने विस्तारपूर्वक अपने मिशन के बारे में जानकारी दी। जब गुरु जी अपने पांच अजमाए हुए सिक्खों को अमृत छका चुके तब वे खुद हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गए और उन्होंने विनती की कि उनको भी इसी तरह अमृत छकाएं जैसे उन्होंने इनको छकाया।

गुरु जी के समूचे जीवन इतिहास को खोजने के बाद उनकी शख्सियत के विभिन्न पहलू सामने आते हैं।

एक महान जरनैल : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक महान जरनैल थे। उनको युद्ध-नीति का गहरा ज्ञान था। अनंदपुर साहिब की किलेबंदी उनकी युद्धनीतिक सोच का प्रमाण है, इसी कारण उन्होंने इतनी बड़ी मुगल सलतनत के साथ टक्कर ली और लाखों की तादाद में आई मुगल फौज के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध में उनके कई श्रद्धालु मुसलमानों और हिंदुओं ने भी उनका साथ दिया, बेशक पहाड़ी हिंदू राजाओं ने अपने स्वार्थ के लिए उनका विरोध किया। गुरु जी के योग्य नेतृत्व में सिक्खों ने मुगल फौज का अनंदपुर साहिब के घेरे के समय लंबा समय भूखे-प्यासे रहकर मुकाबला किया। मुगल फौज के जरनैलों ने झूठी कसमें खाकर कहा कि यदि गुरु जी अनंदपुर साहिब छोड़ जाएं तो वे हमला नहीं करेंगे। भूख-प्यास से व्याकुल सिक्खों का हाल देखकर गुरु जी ने दिसंबर १७०४ ई. में अनंदपुर साहिब छोड़ दिया। मुगलई फौज ने कसमें तोड़ कर पीछे से हमला कर दिया। गुरु जी ने युद्धनीतिक ढंग से दुश्मन का डटकर मुकाबला किया। गुरु जी का अथाह नुकसान हुआ। सारा परिवार बिखर गया। दोनों बड़े साहिबजादे अपने हाथों तैयार करके चमकौर की गढ़ी में से मैदान में युद्ध के लिए भेजे जो वैरी के साथ मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। जब पांच सिंघों ने गुरु जी को चमकौर साहिब की गढ़ी छोड़ जाने का हुक्म दिया तब उन्होंने हुक्म मानकर गढ़ी छोड़ दी। कुछ समय बाद अपनी बिखरी हुई शक्ति को पुन: इकट्ठा करके आज के मुकतसर साहिब के स्थान पर मुगल फौज को करारी हार दी।

महान इंकलाबी : गुरु जी ने महान इंकलाबी कार्य किए। ३३ वर्ष की आयु में खालसा पंथ सजाकर दुनिया को एक विलक्षण धर्म दिया। उन्होंने खालसा की विशेष पहचान और नियम स्थापित किए। इस कारण ही खालसा अडोल रह कर बड़ी मुश्किलों का सामना करता रहा है। जात-पात और छूत-छात को समाप्त करने के लिए विभिन्न जातियों, धर्मों एवं वर्णों के व्यक्तियों को खालसा पंथ में शामिल किया। उन्होंने समानता के लिए अमली सुधार किए तथा मसंद-प्रथा में आ चुकी गिरावट के कारण मसंद-प्रथा बंद कर दी।

महान सरबंसदानी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान सरबंसदानी थे। दुनिया के इतिहास में यह एक अनूठी मिसाल है। गुरु जी ने अपना सारा परिवार कौम के लिए कुर्बान कर दिया।

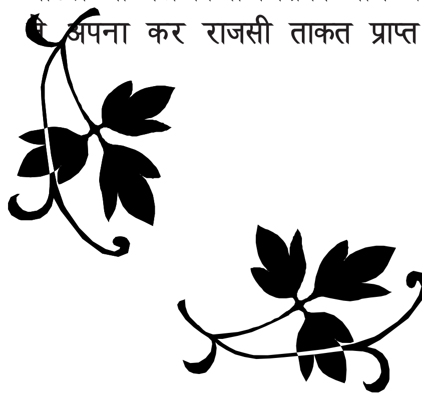
उच्च कोटि के साहित्यकार : गुरु जी ने साहित्य की शक्ति को भांप लिया था, इसलिए आपने उच्च कोटि की साहित्य सृजना की। आपकी ख्यालों वाली उड़ान और दृष्टांत का मुकाबला नहीं किया जा सकता। आप फारसी, ब्रज, संस्कृत और पंजाबी के महान विद्वान थे। आप सिरमौर 'वारकर्ता' भी थे। 'चंडी की वार' का पंजाबी साहित्य में सर्वोच्च स्थान है। इस वार में गुरु जी ने युद्ध को सुखमयी रूप में पेश करके सिक्खों के मन में उपजते खौफ को खारिज कर दिया। इस वार में गुरु जी ने तीन सदी पहले की औरत को वीरांगना के रूप में पेश करके उसे ऊंचा दर्जा दिया है।

आप साहित्यकारों के भी कद्रदान थे। आपके दरबार में ५२ कवि रहते थे, जिनके द्वारा रचा गया साहित्य अन्य गुरु-साहित्य के साथ अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद सरसा नदी की भेंट हो गया।

संगीतकार : गुरु जी महान संगीतकार भी थे। गुरु जी की बाणियों में से विशेष प्रकार की संगीतक लौ, सौंदर्यात्मक शब्दावली और वीर रस की अभिव्यक्ति होती है, जिसका आनंद गायन द्वारा और गायन के बिना भी उठाया जा सकता है। आपकी जापु साहिब, अकाल उसतति, बचित्र नाटक, चौबीस अवतार, शसत्र नाम माला, जफरनामा और चंडी दी वार आदि बाणियां प्रसिद्ध हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगीतक बाणियों में से 'चंडी की वार', 'चौपई' और 'सवैये' लोक-प्रचलित बाणियां हैं। गुरु जी के दरबार में और युद्ध के समय सेना में वीर रस का संचार करने के लिए 'चंडी की वार' का गायन किया जाता था।

गुरु जी के कार्यों ने भारतीय दर्शन को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने राज्य-सत्ता के जुल्म के विरुद्ध केवल आवाज ही नहीं उठाई बल्कि संघर्ष की अगुआई भी की। यदि उन्होंने मुगल सरकार के जुल्म के विरुद्ध तलवार उठाई तो पहाड़ी हिंदू राजाओं द्वारा जनता की लूट-मार के विरुद्ध भी लड़ाई लड़ी। इसी कारण गुरु जी की फौज में केवल हिंदू-सिक्ख ही नहीं बल्कि पीर बुद्धूशाह जैसे मुसलमानों ने भी शामिल होकर जुल्म की अंधेरी को वश में करने की कोशिश की। भाई नबी खां और भाई गनी खां जैसे मुसलमानों ने गुरु जी को 'उच्च दा पीर' बनाकर मुगल फौज से उनकी रक्षा की। यह सब गुरु जी के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक प्रभावों के कारण ही संभव हो सका था। उन्होंने लुटेरों और कट्टरपंथियों के विरुद्ध प्रचार ही नहीं किया बल्कि असली रूप में कार्य करके एक ऐसा मॉडल भी पेश किया जिसको आने वाली पीढ़ियों ने अपना कर राजसी ताकत प्राप्त की।





साहिबजादों की शहादत : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में

*-प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबजादों की शहादत दुनिया के इतिहास में सबसे ज्यादा दर्दनाक घटना एवं दिल दहला देने वाला साका है। एक तरफ यह घटना मानवीय दरिंदगी का घिनौना चित्र पेश करती है, दूसरी तरफ साहिबजादों के अंदर जूझ मरने तथा सिक्खी सिदक की भावना के शिखर को प्रकट करती है। ८ पौष, संवत् १७६१ वि. को गुरु जी के दो बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ तथा बाबा जुझार सिंघ चमकौर साहिब की जंग में लड़ते हुए शहीद हो गये तथा दो छोटे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंघ एवं बाबा फतह सिंघ १३ पौष, संवत् १७६१ को सूबा सरहिंद की कैद में शहीद कर दिए गए। इस शहादत की महानता के बारे में श्री मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है:

जिस कुल जाति, देश के बच्चे, दे सकते हैं यूं बलिदान।
उसका वर्तमान कुछ भी हो, भविष्य है महा महान।

गुरमति के अनुसार आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अहं मिटाने की जरूरत है। यह मार्ग एक महान शौर्य का कार्य है जिसकी नींव रखने वाले प्रथम पातशाह गुरु नानक साहिब ने सिक्खी मार्ग पर चलने के लिए सिर भेंट करने की शर्त रखी थी। इन्हीं कदमों पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई की वैसाखी को खालसा पंथ की सृजना की। खालसा एक आदर्श, संपूर्ण तथा स्वतंत्र मनुष्य है, जिसको गुरबाणी में सचिआर, गुरमुख तथा ब्रह्मज्ञानी कहा गया है। खालसा गुरु को तन-मन सौंप देता है तथा जब्र-जुल्म के मुकाबले के लिए जूझ मरने से झिझकता नहीं है:

--जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

--अरु सिखहों आपने ही मन को,
इह लालच हउ गुन तउ उचरों ॥
जब आव की अउध निदान बनै,
अति ही रन मै जब जूझ मरों ॥
(चंडी चरित्र)

मुगल शासन के साथ-साथ कट्टरवादी तथाकथित उच्च-जातीय समाज भी किसी के सिद्धांत तथा स्वरूप से अप्रसन्न था, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा में जात-पात, ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं है, बल्कि यह *"नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥"* तथा *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* के सिद्धांत पर आधारित थी। कट्टरपंथी तथाकथित उच्च-जातीय समाज तथा पहाड़ी राजा तथाकथित नीच जातियों के लोगों को मान-सम्मान तथा बराबरी/सिरदारी देने के विपरीत थे, इसी लिए पहाड़ी राजाओं एवं अन्य कथित उच्च-जातीय समाज द्वारा खालसे की

**पूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो. : ९९१५८-०५१००*

सृजना का विरोध किया गया था। कई जगहों पर तत्कालीन समाज में तनाव भी पैदा हो गया था। पहाड़ी राजा और सूबा सरहिंद गुरु जी के विरुद्ध एकजुट हो गए थे। १७०४ ई में मुगल तथा पहाड़ी राजाओं की फौज ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। घेरा लंबे समय तक होने के कारण दुश्मनों द्वारा गुरु जी के साथ समझौता किया गया। समझौते की शर्त यह थी कि एक बार गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें तो उन्हें बेरोक जाने दिया जायेगा। इस बारे में गुरु जी को लिखित 'कसमें' भी भेजी गईं। दीना कांगड़ से गुरु जी के द्वारा बादशाह औरंगजेब को लिखे 'जफरनामा' में भी जिक्र किया है कि अगर तू कुरान की खाई हुई लिखित कसमें देखना चाहता है तो वो भी मैं तुझे भेज सकता हूं :

तुरा गर बबायद कउलि कुरां ॥
बनिज़दे शुमा रा रसानम हमां ॥ (जफरनामा)

गुरु जी द्वारा किला खाली करके जाने पर दुश्मनों ने सारी कसमें तोड़कर उनका पीछा करना शुरू कर दिया। यह धर्महीन राज्य-सत्ता का ही नंगा नाच था, बेईमानी, वादा-खिलाफी, चंगेजी तथा दरिंदगी का घिनौना कार्य था। इसलाम के मशहूर कवि अलामा इकबाल ऐसे हालात के बारे में यूं लिखते हैं :

जलाले पादशाही हो कि जमहूरी तमाशा हो,
जुदा हो दीं से सिआसत तो रहि जाती है चंगेज़ी।

सरसा नदी के पास पहुंचते ही भयंकर लड़ाई हुई, जिसके दौरान गुरु जी के छोटे साहिबजादे तथा माता गुजरी जी साथी दल से बिछुड़ गए। दुनिया के युद्धों के इतिहास में यह एक ही घटना हुई जब मर्द-ए-मैदान, शहंशाह-ए-शहंशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास जहां जंग का साज-ओ-सामान तीर, तलवार, ढाल, बरछा, छवी आदि थे वहीं गुरमति संगीत के साज सिरंदा, सितार आदि भी साथ थे। ७ एवं ८ पौष की रात का समय अमृत वेले ढाई बजे का हुआ। दुश्मनों ने भारी हमला किया। पातशाह ने अपने बड़े सुपुत्र बाबा अजीत सिंघ, भाई जीवन सिंघ (भाई जैता जी), भाई उदै सिंघ को अन्य सिंघों सहित हमलावरों का मुकाबला करने का हुक्म दिया। दूसरी तरफ भाई दया सिंघ आदि को *"अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु"* के अनुसार 'आसा की वार' का कीर्तन करने को कहा। ऐसा कार्य केवल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही कर सकते थे। ऐसे अति बिखम, खतरे भरपूर हालात में तथा मैदान-ए-जंग में वे अपना फर्ज-ए-अलाही नहीं भूले। दुनिया के इतिहास में यह एक अद्भुत एवं विलक्षण घटना थी। सरसा नदी में भारी बाढ़ तथा दुश्मनों का जोरदार हमला ऐसे लगता था जैसे दोनों एक-दूसरे के साथ इस घिनौने कारनामे में शामिल हो गए हों। चाहे इस युद्ध में सैंकड़े ही जांबाज सिंघों सहित भाई जीवन सिंघ तथा भाई उदै सिंघ भी शहीद हो गए परंतु दुश्मन के दांत खट्टे कर दिए। यहां पर गुरु साहिब के काफिले से माता गुजरी जी, बाबा जोरावर सिंघ तथा बाबा फतह सिंघ बिछुड़ गए। इस स्थान पर आजकल 'गुरुद्वारा परिवार विछोड़ा साहिब' सुशोभित है जिसने इतिहास की इस दर्दनाक घटना की याद को संभाल कर रखा है। उपरांत सरसा नदी पार करके गुरु जी ने एक दिन रोपड़ के पास निहंग खान की गढ़ी में बिताया। रात को आगे चल पड़े। दुश्मनों की फौजों ने भी पीछा करना शुरू कर दिया। गुरु जी ने चमकौर की कच्ची गढ़ी में दाखिल होकर मोर्चाबंदी कर ली। उनके साथ दो बड़े साहिबजादे तथा पांच प्यारों सहित

कुल चालीस सिंघ थे। दुश्मन की दस लाख फौज ने कच्ची गढ़ी को घेरा डाल लिया। सारा दिन लड़ाई होती रही। शाम तक गुरु जी के पास गोली-सिक्का खत्म हो गया। अब सिंघों ने गढ़ी से बाहर आकर लड़ना शुरू कर दिया। गुरु जी ने खुद बारी-बारी बाबा अजीत सिंघ तथा बाबा जुझार सिंघ को पूरे शस्त्र सजाकर मैदान-ए-जंग में भेजा तथा जुझारू योद्धाओं वाले जौहर दिखाते हुए साथी सिंघों के साथ गुरु जी के दोनों साहिबजादे बड़ी शूरवीरता से उनके सामने लड़ते हुए शहीद हो गए। बाबा अजीत सिंघ ने अभी जवानी में पैर ही रखा था। बाबा जुझार सिंघ अभी किशोर अवस्था में थे। सतिगुरु अगर चाहते तो अपने सुपुत्रों को बचाने के लिए यत्न कर सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। दुनियावी लोग अपने निजी स्वार्थों की खातिर सारे उसूलों, सिद्धांतों एवं कौमी हितों को भी कुर्बान करने से नहीं झिझकते। ऐसे लोगों को इतिहास में घृणा की नजर से देखा जाता है।

सतिगुरु द्वारा मैदान-ए-जंग में जूझते हुए शहीदी पाने के लिए की गई तैयारी तथा सतिगुरु द्वारा शेष रहते महत्वपूर्ण पंथक कार्यों की पूर्ति को मुख्य रखते हुए पांच सिंघों ने सतिगुरु को गढ़ी छोड़ कर चले जाने के लिए कहा। खालसे का हुक्म मानते हुए जब गुरु जी ताली बजा कर तथा मुगलों को ललकार कर बाहर की ओर रवाना हुए तो उन्होंने अपने सभी शहीद सिंघों को मेहर भरी नज़र से निहारा। उनकी नज़र में साहिबजादों तथा सिंघों में कोई अंतर नहीं था। उनके सामने चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान था :

गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥

(पन्ना ६४८)

चमकौर की जंग दुनिया की सबसे असमान जंग थी। इसी तरह की असमान जंग की मिसालें सिक्ख इतिहास में अन्य भी मिलती हैं, परंतु अन्य कौमों के इतिहास में शायद न के बराबर हैं। इस जंग का जिक्र करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लिखा है कि भूखे-प्यासे चालीस आदमी क्या कर सकते हैं, अगर उन पर दस लाख का लशकर अचानक टूट पड़े :

गुरसनह चिह कारे कुनद्द चिहल नर ॥
कि दह लक्क बिआयद बरो बेख़बर ॥

(जफरनामा)

चमकौर की धरती 'चमकौर साहिब' बन गई। यहां पर साका चमकौर साहिब की याद में गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब, गुरुद्वारा कच्ची गढ़ी साहिब, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, गुरुद्वारा ताड़ी साहिब तथा गुरुद्वारा रणजीतगढ़ साहिब सुशोभित हैं।

माता गुजरी जी तथा दोनों छोटे साहिबजादों को गुरु-घर का रसोइया गंगाराम (गंगू) मिल गया। यह उनको मोरिंडा (जिला रोपड़, पंजाब) के पास गांव सहेड़ी अपने घर ले गया। घर पहुंच कर गंगू का मन बेईमान हो गया। उसने मोरिंडा के थानेदार को खबर देकर छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी को गिरफ्तार करवा दिया। मोरिंडे के थानेदार ने माता जी तथा साहिबजादों को १० पौष, संवत् १७६१ को सूबा सरहिंद के हवाले कर दिया। गंगाराम दशमेश जी के घर में पिछले कई वर्षों से रसोइये की सेवा कर रहा था। धन की खातिर बेईमान हो जाने की घटना के कारण ही 'गंगाराम' को 'गंगू' कहकर घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। वह बेवफा, विश्वासघाती एवं बेईमान कहलाया।

छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी को

उस रात किले के ठंडे बुर्ज में रखा गया। पौष की ठंडी रात, भूखे-प्यासे दादी-पोते, इससे बड़ा तथा कठिन इम्तिहान शायद ही दुनिया के इतिहास में किसी को पास करना पड़ा हो। राज्य के भय एवं सख्ती के बावजूद भाई मोतीराम महिरा ने भारी जोखिम उठाकर इन निर्भय तथा निरवैर शूरवीरों की दूध-पानी के साथ सेवा की। इसी कारण बाद में भाई मोतीराम महिरा को परिवार समेत शाही हुक्मानुसार कोहलू में पीसकर शहीद कर दिया गया। दूसरे दिन साहिबजादों को सूबा सरहिंद की कचहरी में पेश किया गया। कचहरी में साहिबजादों को दीन-ए-मुहम्मदी कबूल करने के लिए लालच देने तथा डराने-धमकाने के यत्न किए गए। उनको झूठ भी बोला गया कि "आपका पिता मारा गया है, अब आप भी मारे जाओगे!" साहिबजादों ने अपना धर्म छोड़ने का दिलेरी से इन्कार कर दिया। वजीर खान ने काजी की राय ली कि इन साहिबजादों को क्या सजा दी जा सकती है? काजी ने कहा कि इसलाम में बच्चों को सजा देने की इजाजत नहीं है। वजीर खान भी किसी हद तक साहिबजादों को शहीद करने का कलंक अपने माथे पर लगाने से बचना चाहता था। अब उसने नवाब मलेरकोटला से कहा कि वो चाहे तो अपनी मर्जी के अनुसार इन बच्चों को सजा देकर अपने भाई की मौत का बदला ले सकता है। नवाब मलेरकोटला मुहम्मद शेर खान ने कहा कि "मेरा भाई जंग में मारा गया था। मैं इन शीरखोर बच्चों से कोई बदला नहीं लेना चाहता।" अल्ला यार खां योगी के शब्दों में :

बदला ही लेना होगा तो लेंगे बाप से।
महिफूज रखे हम को खुदा ऐसे पाप से।

काजी तथा शेर खान के इस तरह के रवैये को देखते हुए वजीर खान के मन में नरमी आने लगी थी, परंतु दीवान सुच्चा नंद नहीं चाहता था कि साहिबजादों को छोड़ दिया जाये। ऐतिहासिक हवालों के अनुसार उसने एक शैतान की तरह साहिबजादों को कुछ ऐसे प्रश्न किए जिसके उत्तर से उनको बागी सिद्ध किया जाये। उसने वजीर खान को भी उकसाया कि "साहिबजादों को छोड़ना बुद्धिमता नहीं होगी, क्योंकि ये बागी पिता के बागी पुत्र हैं तथा बड़े होकर मुगल सलतनत के लिए खतरा बन जायेंगे।"

सुच्चा नंद की उकसाने वाली दलीलें सुनकर वजीर खान ने भी साहिबजादों को सजा देने का मन बना लिया। काजी से फिर पूछा गया। इस बार काजी ने मालिकों की मर्जी के अनुसार परंतु कुरान शरीफ की शिक्षाओं के विपरीत साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिने जाने का फतवा दे दिया। साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिना गया। दीवार जब साहिबजादों के कंधों तक आई तो गिर गई। साहिबजादों के फूलों जैसे शरीर बेहोश हो गए थे।

अब साहिबजादों को कत्ल करने का हुक्म सुनाया गया। समाणा के दो जल्लादों--शाशल बेग तथा बाशल बेग ने दोनों साहिबजादों को घुटनों तले रख कर उनके शीश धड़ से अलग कर दिए। दुनिया की यह अजीम, विलक्षण, बेमिसाल, दिल दहलाने वाली ऐतिहासिक शहीदी १३ पौष, संवत् १७६१ को हुई। इस आलौकिक शहीदी ने भारत के इतिहास का बहाव ही मोड़ दिया तथा दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया। साहिबजादों ने अपने शीश भेंट करके सिक्ख कौम तथा भारत का शीश ऊंचा कर दिया। साहिबजादों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने अकाल पुरख का ध्यान धरा तथा

अपने प्राण त्याग कर शहीदी पा ली। भारत तथा सिक्ख कौम के इतिहास में हक, सच, धर्म, मानवीय अधिकारों तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए किसी स्त्री की यह पहली शहीदी थी। जहां छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी की शहीदी हुई वहां पर आजकल 'गुरुद्वारा श्री फतहगढ़ साहिब' सुशोभित है।

साहिबजादों की शहीदी मात्र शहीदी नहीं थी बल्कि इससे भी बहुत ज्यादा थी। उनको मानसिक तौर पर लुभाने का यत्न किया गया था। कई बार मृत्यु का भय भी दिखाया गया। उनके हर बार मना कर देने पर उन्हें तड़पा-तड़पा कर शहीद कर दिया गया। यह सारा अत्याचार उन्होंने कैसे सहन किया इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने जब्र का मुंह मोड़ कर दस पातशाहियों, देश तथा कौम की शान को कायम रखा और खालसा पंथ को लासानी तथा ऐतिहासिक फतह दिलवाई।

गुरु जी के छोटे साहिबजादों को इस मकसद से शहीद किया गया था कि सिक्खी का दीपक इस जगत में से सदा के लिए बुझ जायेगा परंतु उनको इस बात का एहसास नहीं था कि सिक्खी की अखंड ज्योति तो खालसे के दिलों में प्रवेश कर चुकी थी। शहीदी के पश्चात प्रचंड हुई इस ज्योति ने उत्तरी भारत में ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दी जिसमें मुगलिया सलतनत अंततः तबाह हो गई।

साहिबजादों की शहीदी के संबंध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगजेब को दीना कांगड़ की धरती से लिख कर भेजे 'जफरनामा' में लिखा था कि क्या हुआ, मेरे चार पुत्र शहीद कर दिए हैं, मेरा पांचवां पुत्र 'खालसा' तो अभी जिंदा है :

चिहा शुद कि चूं बच्चगां कुशतह चार ॥
कि बाकी बिमांदा सत पेचीदह मार ॥ (जफरनामा)

साहिबजादों ने गुरु-घर के महान उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपनी जानें कुर्बान कर दीं। यह थी वक्त की हैरतअंगेजी तथा राज्य की शक्ति की दरिंदगी की इंतहा कि सूबा सरहिंद ने इन शहीदों का अंतिम संस्कार करने के लिए जगह देने के लिए शर्त रख दी। सूबा सरहिंद के अहम अहिलकार, परंतु गरु-घर के श्रद्धालु दीवान टोडरमल ने शर्त अनुसार धन इकट्ठा करके खड़ी अशर्फियां रखकर अंतिम संस्कार हेतु जगह मोल ली और उनका अंतिम संस्कार किया। यहां आजकल 'गुरुद्वारा श्री जोती सरूप साहिब' सुशोभित है।

लगभग साढ़े पांच साल बाद १२ मई, १७१० को बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा चप्पड़चिड़ी के मैदान में सूबा सरहिंद को मार दिया तथा १४ मई को 'सरहिंद फतह' का एलान कर बाबा बाज सिंघ तथा बाबा आली सिंघ को सरहिंद का सूबेदार नियत कर दिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर के ९ जून, १७१६ को शहीदी पा जाने के उपरांत सरहिंद पुनः मुगलों के कब्जे में आ गया। १ जनवरी, १७६४ में सिक्ख मिसलों के समय बाबा जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में सिंघों ने सरहिंद को फतह किया। इस लड़ाई में सूबेदार जैन खान मारा गया। साथ ही उसके दोनों जरनैल सैद खां तथा यार मुहम्मद खां भी मारे गये। अफगान फौजें हार खाकर भाग निकलीं। इसके पश्चात सिक्ख फौज द्वारा सरहिंद के किले, जो मुगल राज्य-शक्ति का चिन्ह था, को मिट्टी में मिलाकर वहां पर गधों से हल चलाया गया। सिंघों ने *"जबै बाण लागयो तबै रोस जागयो"* के अनुसार साहिबजादों तथा माता गुजरी जी की शहीदी के दोषियों को मार कर इतिहास में एक और

सुनहरी पन्ना जोड़ दिया।

खालसा पंथ तथा देशवासी उन महान आत्माओं--छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी के शहीदी साके की सालाना याद सत्कार एवं पूर्ण श्रद्धा सहित मनाते हैं। प्रतिदिन सैंकड़े तथा दिसंबर माह में तीन दिन तक चलने वाले सालाना शहीदी जोड़-मेले के समय लाखों श्रद्धालु देश-प्रदेश तथा विदेश से श्रद्धा-सत्कार भेंट करने आते हैं। उन महान शहीदों के चरणों में हम यही बड़ी भेंटा रख सकते हैं कि हम उनकी महानता को समझें, उनकी भावनाओं का सत्कार करें तथा सिक्खी आदर्शों पर पहरा देने का प्रण करें। उन्होंने जिस तरह के समाज का निर्माण करने के लिए स्वयं को दीवारों में चिनवाया तथा जूझते हुए शहीदी पाई, आओ! उस समाज की स्थाप्ति के लिए हर संभव यत्न करें। हमें अपने समाज में से निज-प्रस्ती, कुनबा-प्रवृत्ति तथा भ्रष्टाचार को खत्म करने की अति आवश्यकता है। हमें पतितता, मादा भ्रूण-हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता तथा दहेज जैसी कुरीतियों को उखाड़ देना चाहिए और खंडे-बाटे की पाहुल 'अमृत' छक कर गुरु वाले बनना चाहिए।

चारों साहिबजादों की बेमिसाल शहीदी को याद करते हुए जब हम अपने इर्द-गिर्द नजर मारते हैं और सिक्ख कौम में आ चुकी घोर गिरावट को महसूस करते हैं तो सिर शर्म से झुक जाता है। क्या हम सोचेंगे कि हम किस दिशा में जा रहे हैं? सतिगुरु ने अपने लख्त-ए-जिगर साहिबजादों को शहीद करवाकर सिक्ख कौम को स्वाभिमान से लबालब जिंदगी बख्शी थी। साहिबजादों ने अपने शीश भेंट करके भारत का शीश, धर्म, गौरव, स्वाभिमान तथा सभ्याचार बचाया और 'सरहिंद' को सच में 'हिंद का सिर' बना दिया।

वे कौमें दुनिया के तख्ते से मिट गईं जो खुदगर्जी के कारण अपने धार्मिक सिद्धांत, महान विरासत, इतिहास तथा शहीदों को अनदेखा करके अपनी झूठी लालसाओं को पूरा करने में ही गलतान हो गईं। आओ! अपनी महान विरासत के महान वारिस बनने का यत्न करें तथा साहिबजादों की शहादत से दिशा लेते हुए देश-धर्म की रक्षा में तन-मन से अपना-अपना योगदान डालें तथा अपना जन्म सार्थक करें।

साका चमकौर एवं साका सरहिंद

*-डॉ. गुरविंदर कौर**

नि:संदेह शहीद किसी भी कौम की बहुमूल्य सम्पदा होते हैं। ये तो किसी कौम की जीती-जागती जमीर की आवाज तथा हक-सच की लड़ाई में एक मशाल की भांति होते हैं। सिक्ख इतिहास अद्वितीय कुर्बानियों का गौरवमयी इतिहास है। सिक्ख कौम में श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के बाद असंख्य सिक्खों ने शहीदियां दी हैं, परंतु साहिबजादों की शहीदी की तसवीर जब भी आंखों के सामने आती है तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए लासानी शहादत दी जो सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में लिखी गई है। एक सिक्ख विद्वान के अनुसार "साहिबजादों की शहादतें चेतन स्वरूप में स्व-सृजित तथा रूपमान लिए बहादुरी के कारनामे थे, जो कौम और देश का गौरव बने। इनके अंदर गुरु-पिता, गुरु-दादा, गुरु-विरासत से प्राप्त नाम-रंग की शूरवीरता थी।"

सिक्खों द्वारा हर वर्ष दिसंबर माह में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों की लासानी शहादत को पूर्ण श्रद्धा-भावना से मनाया जाता है। समूह सिक्ख जगत ने दिसंबर, २००४ में साहिबजादों की पावन शहीदी की तीसरी शताब्दी मनाई है।

बेशक तीन शताब्दियां बीत गईं हैं किंतु हर वर्ष लाखों श्रद्धालु साहिबजादों की पवित्र याद में शहीदी जोड़-मेले भारी उत्साह के साथ मनाते आ रहे हैं। संगत अपने श्रद्धा-सुमन भेंट करने के लिए भारी सर्दी में चमकौर साहिब तथा फतेहगढ़ साहिब पहुंचती है। पवित्र स्थानों को जाने वाली सभी सड़कों पर जगह-जगह पर लंगर एवं छबीलें लगाकर गुरु-प्यारे हाथ जोड़े संगत को रोक कर सेवा प्रवान करने के लिए विनती करते दिखाई देते हैं ताकि अद्वितीय शहीदों को श्रद्धा-सुमन भेंट करने आने वालों की लंगर आदि से सेवा कर सकें। यह सिलसिला सदैवकालीन चलता रहेगा, क्योंकि एक शायर का कथन है:

शहीदों की कत्लगाह से क्या बेहतर काबा?
शहीदों की खाक पे तो खुदा भी कुर्बान होता है।

चार साहिबजादों की लासानी तथा अद्वितीय शहादत संबंधी विचार करने से पहले उनके जीवन के बारे में संक्षिप्त में जानना आवश्यक लगता है।

संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबजादों--बाबा अजीत सिंघ, बाबा जुझार सिंघ, बाबा जोरावर सिंघ तथा बाबा फतह सिंघ का जन्म क्रमश: सन् १६८७, १६९०, १६९६ तथा १६९९ ई में हुआ। छोटी आयु में महान कारनामे करते हुए शहीद होने के कारण सिक्ख संगत इनके नाम के साथ 'बाबा' शब्द लगाकर सत्कार करती है। गुरु जी ने अपने साहिबजादों के लिए श्री अनंदपुर साहिब में रहते हुए धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक तंदरुस्ती, घुड़सवारी, तीरंदाजी तथा

**गांव व डाकखाना सूलर, जिला पटियाला-१४७००१*

तलवार, नेजे आदि शस्त्रों की शिक्षा का भी विशेष प्रबंध किया।

बाबा अजीत सिंघ की निपुणता संबंधी इतिहास में एक घटना का जिक्र आता है कि एक दिन गुरु-दरबार में देवदास नाम का एक नौजवान ब्राह्मण फरियाद करने आया कि उसकी नव-ब्याही पत्नी को बस्सी गांव के नजदीक रास्ते में जाते समय पठानों ने छीन लिया है, उसकी मदद की जाए तथा उसकी पत्नी को वापिस कराया जाए। गुरु साहिब ने साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ को हुक्म दिया कि वह कुछ सिंघों को साथ लेकर बस्सी के पठान जाबिर खां से इस ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाकर इसके हवाले करे तथा जाबिर खां को उसके किए की सजा दे। कहते हैं कि साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ ने १०० घुड़सवार सिंघों के दसते को साथ लेकर सुबह होने से पूर्व ही जाबिर खां की हवेली को जा घेरा। दरवाजा तोड़कर अंदर से जाबिर खां को पकड़कर घोड़े पर बांध लिया तथा ब्राह्मण की पत्नी को पठान की कैद से आजाद करवाकर वापिस श्री अनंदपुर साहिब आ गए। ब्राह्मण की पत्नी उसके हवाले की। कुकर्मी जाबिर खां को उसके नीच कर्मों की कड़ी सजा दी गई। गुरु-पिता साहिबजादे के इस कारनामे पर बहुत खुश हुए। अपने गुरु-पिता की देखरेख में रहते हुए चारों साहिबजादों ने सिक्खी की जीवन-जाच दृढ़ की।

आओ जाने, उन हालातों की पृष्ठभूमि के बारे में जिसके कारण शहीदी साका हुआ :-

शहादत की पृष्ठभूमि : साहिबजादों की शहादत की पृष्ठभूमि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा की गई खालसा पंथ की सृजना के साथ जाकर जुड़ती है। गुरु नानक साहिब द्वारा आरंभ किए कार्य को संपूर्णता बख्शिश करने के लिए गुरु जी ने संवत् १७५६ की वैसाखी को श्री अनंदपुर साहिब में विशाल एकत्रता करके पांच प्यारों का चयन किया तथा उनको अमृत की दात बख्शी। फिर उनसे स्वयं अमृत छककर 'आपे गुर चेला' की मर्यादा चलाई। गुरु जी के दोनों बड़े साहिबजादों ने भी अमृत-पान किया तथा तैयार-बर-तैयार सिंघ सजे। विभिन्न कथित जाति के सिक्खों को एक ही बाटे में से अमृत छकाकर ऊंच-नीच का भेदभाव मिटा दिया तथा सभी को शस्त्रधारी बना दिया। एक अकाल पुरख की उपासना करने तथा वहमों-भ्रमों का त्याग करने का हुक्म दिया। यह सब कुछ तथाकथित ऊंची जाति वाले पंडितों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा राजपूतों को एक आंख न भाया। पहाड़ी राजा भी गुरु जी की बढ़ती ताकत से भयभीत हो गए। उन्होंने गुरु जी द्वारा चलाई लहर को अपनी राज्य-सत्ता तथा धर्म के लिए अति खतरनाक समझा, इसी लिए वे अंदरखाते गुरु जी को खत्म करने के मंसूबे बनाने लगे। उनको पता था कि उनकी फौज गुरु जी के बहादुर सिंघों का मुकाबला नहीं कर सकती, इसलिए उन्होंने फैसला किया कि सरहिंद के नवाब से शाही फौज की सहायता प्राप्त की जाए। नवाब वजीर खां को चिट्ठी लिखकर विनती की गई कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मुगल सरकार तथा आपके लिए भी खतरा हैं, इसलिए इस खतरे का मुकाबला मिलकर करने के लिए फौज भेजी जाये। नवाब ने पैंदे खां तथा दीना बेग की कमान तले दस हजार फौज भेज दी। बाईधार के राजाओं की २० हजार फौज के साथ मिलकर सब ने गुरु जी पर हमला कर दिया। लड़ाई में पैंदे खां गुरु जी के हाथों मारा गया, दीना बेग भी जख्मी होने पर भाग गया। शाही फौज रफूचक्र हो गई।

राजा भीमचंद ने अन्य पहाड़ी राजाओं से सलाह बनाई कि बहुत सारी फौज इकट्ठी करके श्री अनंदपुर साहिब के गिर्द घेरा डाला जाये ताकि अंदर रसद-पानी बंद करके गुरु जी को हार मानने के लिए मजबूर किया जा सके। उसने गुरु जी को एक लंबी चिट्ठी लिखकर कहा, "या तो मेरी रियासत में से निकल जाओ नहीं तो मेरी प्रजा बनकर, मेरे अधीन होकर रहो तथा टके भरो।" *(प्रो करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, भाग पहला, पन्ना ४१४)* जब गुरु जी ने दोनों बातें मानने से इन्कार कर दिया तो राजा भीमचंद ने अन्य राजाओं, मुसलमान गुज्जरों तथा रंघड़ों को साथ लेकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। किले का दरवाजा तोड़ने के लिए मस्त शराबी हाथी को आगे भेजा। भाई बचित्तर सिंघ ने पूरे जोर के साथ नेजा उसके माथे में मारा तो वह चिंघाड़ता तथा अपनी ही फौज को रौंदता हुआ भाग गया। सारी फौज में भगदड़ मच गई।

अब पहाड़ी राजाओं ने मुगल बादशाह औरंगजेब को गुरु जी के विरुद्ध प्रेरित किया तथा मदद के लिए शाही फौज की सहायता के लिए विनती की। उसने सूबा लाहौर तथा सूबा सरहिंद को हुक्म भेजा कि पहाड़ी राजाओं को साथ लेकर गुरु जी पर तुरंत हमला किया जाये और हराये बिना जंग बंद न की जाये। इस हुक्म के अनुसार भारी फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर चढ़ाई कर दी। एक तरफ लाखों की फौज एवं मुलखईया था तथा दूसरी तरफ सिक्ख फौज की गिनती १० हजार के लगभग थी। खालसा फौज ने बेमिसाल वीरता तथा दृढ़ता के साथ डटकर मुकाबला किया। श्री अनंदपुर साहिब में हुई लड़ाइयों में बाबा अजीत सिंघ ने बहादुरी के अद्भुत जौहर दिखाए। लगभग छः माह तक जंग जारी रही, परंतु हार-जीत का फैसला न होता देखकर राजाओं तथा मुगल फौज के जरनैलों ने गुरु जी को किले में से बाहर निकालने की एक चाल सोची। एक ब्राह्मण और एक मौलवी को जामिन बनाकर भेजा, जिन्होंने गीता एवं कुरान की कसमें खाकर कहा कि अगर गुरु जी किला छोड़कर चले जायें तो उनके रास्ते में कोई रुकावट नहीं डाली जायेगी। गुरु जी उनकी बुरी नीयत को जानते थे, इसलिए परखने के लिए कुछ बैलगाड़ियां कबाड़ से भरकर, ऊपर रेशमी चद्दरें डालकर भेज दीं। लालची मुगलों ने समझा कि खजाना जा रहा है, अतः वे उन बैलगाड़ियों पर टूट पड़े, परंतु शर्मिंदगी का मुंह देखना पड़ा। इससे उनकी झूठी कसमों की पोल भी खुल गई। कुछ दिनों के बाद उन्होंने गुरु जी के पास इस भूल के लिए क्षमा-याचना-पत्र भेजा तथा फिर किला खाली करने की विनती की गई। पहाड़ी तथा मुगल फौजों के अधिकारियों ने गाय एवं कुरान की कसमें खाकर गुरु जी से कहा, "आप एक बार किला छोड़ जायें। आपके इस तरह करने से हमारी इज्जत बनी रहेगी। आप अमन-चैन से चले जाना। हम अपनी फौज लेकर वापिस चले जायेंगे।"

श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना तथा गुरु-परिवार का बिछुड़ना : गुरु जी के सिक्ख कई दिनों की भूख तथा मेहनत के कारण थके हुए थे। उन्होंने माता गुजरी जी को मध्यस्थ बना कर गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ कर जाने के लिए मना लिया। माता जी एवं सिक्खों के बार-बार कहने पर गुरु जी ने ६ पौष, संवत् १७६१ (५ दिसंबर, १७०४ ई.) की जाड़े की रात को परिवार तथा सिक्खों सहित किला खाली कर दिया और रोपड़ की

तरफ चल पड़े। गुरु जी के किले में से निकलते ही दुश्मन फौज ने अपनी कसमें तोड़कर गुरु जी पर हमला कर दिया। रात के अंधेरे तथा बारिश में सरसा नदी के किनारे घमासान युद्ध हुआ। अनेकों सिंघों ने शूरवीरता के साथ दुश्मन फौज का मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त की।

अमृत वेले गुरु जी ने नितनेम के अनुसार 'आसा की वार' का कीर्तन किया तथा दीवान सजाया। इसके उपरांत सरसा नदी पार करने की तैयारी की गई। बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ ने कुछ सिंघों के साथ दुश्मन फौज को रोके रखा। शेष साथी सिंघ नदी में घुस गए। इस समय नदी का बहाव जोरों पर था। गुरु जी का सारा सामान तथा बहुमूल्य साहित्य-संग्रह सरसा नदी में बह गया। गुरु जी के माता जी तथा छोटे साहिबजादे गुरु जी के संग से बिछुड़ गए। रसोइये गंगू के कहने पर माता जी एवं छोटे साहिबजादे उसके साथ उसके गांव खेड़ी (सहेड़ी) चले गए। गुरु जी रोपड़ की ओर चले गए तथा माता सुंदरी जी एवं माता साहिब कौर जी भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली की तरफ चले गए। गुरु साहिब बड़े साहिबजादों तथा अन्य लगभग ४० सिंघों के साथ चमकौर साहिब पहुंच गए। यहां पर चौधरी बुधीचंद की गढ़ीनुमा कच्ची हवेली थी। मारोमार करती हुई पीछा कर रही शाही फौज का सामना करने के लिए गुरु जी ने इसमें युद्ध के पक्ष से मोर्चाबंदी कर ली।

बड़े साहिबजादों की शहादत : दुशमनों ने भारी फौज के साथ चमकौर की गढ़ी को घेर लिया। एक तरफ लाखों की गिनती में मुगल सेना और दूसरी तरफ गुरु जी के लिए कुर्बान होने वाले जांबाज केवल ४० सिक्ख। वे कुछ समय तक तीरों की बौछार से दुश्मन को गढ़ी से दूर रखने में सफल हो गए। जब तीर खत्म होने को आ गए तो गुरु जी पांच-पांच सिंघों का जत्था दुश्मनों के साथ जूझने के लिए मैदान-ए-जंग में भेजने लगे, जो 'जैकारों' की गूंज में वैरियों पर टूट पड़ते तथा सैंकड़ों सिपाहियों को मौत के घाट उतारते हुए स्वयं शहीद हो जाते। जब काफी सिंघ शहीद हो गए तो शेष बचे सिंघों ने गुरु जी से विनती की कि वे रात के अंधेरे में साहिबजादों को साथ लेकर गढ़ी से बाहर निकल जायें। गुरु जी ने उत्तर दिया कि आप सभी मेरे पुत्र हो। फिर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने साहिबजादा अजीत सिंघ को जंग में जाने के लिए अपने हाथों से तैयार किया तथा आशीर्वाद देकर पांच सिंघों के साथ मैदान-ए-जंग में भेजा। साहिबजादा अजीत सिंघ ने अपनी बहादुरी के ऐसे जौहर दिखाए कि शत्रु-दल दंग रह गया तथा 'अल्लाह-अल्लाह पुकारने लग गया। आखिरी दम तक जूझते हुए बाबा अजीत सिंघ तथा अन्य सिंघों ने शहीदी-जाम पीया। अपने बड़े भाई की बहादुरी से उत्साहित होते हुए छोटे साहिबजादे बाबा जुझार सिंघ ने भी अपने बड़े भाई के पद-चिन्हों पर चलने के लिए गुरु-पिता से जंग में जाने की आज्ञा मांगी। इस बातचीत को शायर योगी अल्लाह यार खां ने इस तरह बयान किया है :

इस वक्त कहा नन्हें से मासूम पिसर ने :
"रुखसत हमें दिलवाओ पिता, जायेंगे मरने!
भाई से बिछड़ कर हमें, जीना नहीं आता।
*सोना नहीं, खाना नहीं, पीना नहीं भाता!"*९६।
पिता जी का उत्तर :
मरने से किसी यार को, हमने नहीं रोका।
फरजंदि वफादार को, हमने नहीं रोका।
खुशनूदीइ करतार को, हमने नहीं रोका।

अब देखिए, सरकार को, हमने नहीं रोका।
तुमको भी इसी राह में, कुरबान करेंगे!
सद शुक्र है हम भी कभी, खंजर से मरेंगे! . . .९८। . . .
"लो जाओ, सिधारो, तुम्हें करतार को सौंपा! . . .
सिक्खी को उभारो, तुम्हें करतार को सौंपा!
वाहिगुरु अब जंग की, हिम्मत तुम्हें बखशे!
प्यासे हो जात, जाम-ए-शहादत तुम्हें बखशे!१०६।
(गंजि-शहीदां)

पिता-गुरु ने अपने दूसरे साहिबजादे को भी आशीष देकर पांच सिंघों के साथ खुशी-खुशी से जंग-ए-मैदान में भेजा। तीरों की बौछार तले बाबा जुझार सिंघ आगे बढ़ते हुए वैरियों का नाश करते रहे तथा अंत में साथियों सहित शत्रुओं से जूझते हुए शहीदी प्राप्त की। दशमेश पिता ने गढ़ी में से अपने सुपुत्रों की बहादुरी के कारनामे देखे और फिर शहीद होते देखकर अकाल पुरख का शुक्राना किया कि "दोनों साहिबजादे सिक्खी-सिदक में पूरे उतरे हैं तथा इम्तिहान में पास हुए हैं। तेरी अमानत तुझे ही सौंप दी।" "है कोई संसार के इतिहास में ऐसी मिसाल किसी अन्य रहबर की जिस पर से उसके सिक्ख अपनी जानें वारने के लिए तैयार हों तथा वो अपने बच्चों को आंखों के सामने शहीद होता देखकर परमात्मा का शुक्राना कर रहा हो?" *(खून शहीदां दा, सिक्ख मिशनरी कॉलेज, पन्ना २८)* ये दोनों शहीदियां ८ पौष, संवत् १७६१ (७ दिसंबर, १७०४ ई) को हुईं। "संसार के युद्धों के इतिहास में कहीं भी ऐसी उदाहरण नहीं मिलती जहां मात्र शूरवीरों ने लाखों की गिनती में शाही सेना से लोहा लिया हो। *'सवा लाख से एक लड़ाऊं'* का नजारा चमकौर की गढ़ी में प्रत्यक्ष हुआ।" *(डॉ. जगजीत सिंघ, सिक्ख फुलवाड़ी, मासिक, दिसंबर २०००, पन्ना १५)*

छोटे साहिबजादों की शहादत : जैसे कि उपरोक्त जिक्र किया गया है कि सरसा नदी की जंग के उपरांत दोनों छोटे साहिबजादे अपनी दादी मां माता गुजरी जी के साथ गंगू रसोइये के साथ उसके गांव सहेड़ी चले गये। जब रात को माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादे सो रहे थे तो गंगू की नीयत खराब हो गई। उसने जेवरों तथा मोहरों वाली थैली चुरा ली। सुबह होने पर जब माता जी ने पूछा तो नमक-हराम गंगू ने साफ इन्कार कर दिया। खुद को सच्चा साबित करने के लिए वो ऊंची-ऊंची शोर मचाने लगा। उसने मुसलमान हकूमत से इनाम हासिल करने के लिए माता जी तथा मासूम बच्चों को गिरफ्तार करवा दिया। गंगू की बदनीयत के कारण मासूम बेदोश साहिबजादों को पौष माह की रातों में दादी मां के साथ ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया। माता गुजरी जी दिसंबर माह की बर्फ जैसी ठंडी रात को अपने पोतों को अपने शरीर के साथ लगाकर गरमाती तथा सुलाने का यत्न करती रहीं। साथ ही सिंघों की बहादुरी की कहानियां सुना-सुनाकर उनमें वीरता का जजबा भरती रहीं ताकि वे अगले दिन हाकिमों के सामने डगमगा न जायें। अगले दिन साहिबजादों को सरहिंद के नवाब की कचहरी में पेश करने का फरमान जारी हुआ। दादी ने अपने पोतों को प्यार से तैयार किया तथा कहा, "अपने धर्म को अपनी जानें वार कर भी कायम रखना। आप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के शेर बच्चे हो, जिसने जालिमों से कभी हार नहीं मानी। तुम उस दादे के पोते हो, जिसने धर्म की रक्षा की खातिर अपना शीश वार दिया। देखना, कहीं वजीर खां द्वारा दिए भय एवं लालचों के कारण धर्म के प्रति

कमजोरी न दिखा जाना।" दोनों ने हिम्मत से जवाब दिया, *"धन्य भाग हमारे हैं माई। धरम हेत तन देकर जाई।"* नवाब के सिपाही साहिबजादों को लेने आ गए।

साहिबजादों को वजीर खां की कचहरी में पेश किया गया। खाफी खां इतिहासकार आखों देखा हाल लिखता है कि एक साजिश रची गई, जिसके अनुसार उनको पेश होते समय छोटे दरवाजे में से निकाला गया ताकि स्वाभाविक ही उनका सिर झुक जाये। जब वे सिर झुका कर गुजरेंगे तो तालियां मार कर एलान कर दिया जाएगा कि साहिबजादों ने मुगल सरकार के आगे सिर झुकाकर हार मान ली है। मगर आत्मिक तौर पर बलवान साहिबजादों ने छोटे दरवाजे से गुजरते समय कचहरी में दाखिल होने पर पहले पांव आगे निकाले तथा फिर ऊंची गरजती आवाज में 'वाहिगुरु जी की फतहि' बुलाई। साहिबजादों के चेहरों का जाहो-जलाल देखकर सबकी आंखें चुंधिया गईं। दीवान सुच्चा नंद ने कहा, "बच्चो! नवाब साहब को झुककर सलाम करो।" साहिबजादों ने जवाब दिया कि "उनका सिर अकाल पुरख के बिना किसी के आगे नहीं झुक सकता।" नवाब ने साहिबजादों को इसलाम कबूल करने के लिए कहा तथा न मानने पर उन्हें मृत्यु का भय दिया। यह भी कहा गया कि तुम्हारे दोनों बड़े भाई तथा पिता जी अपने सभी सिक्खों सहित मारे गए हैं। तुम अपनी जानें बचा सकते हो। तुम्हें बहुत सुख-आराम से पाला जायेगा तथा ऊंची रियायत पर जागीरें दी जायेंगी। तुम लोग कलमा पढ़कर मुसलमान हो जाओ। अगर नहीं मानोगे तो मारे जाओगे।" आगे से साहिबजादों ने बेझिझक होकर जवाब दिया, "हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संतान हैं तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पोते हैं। हम धर्म की रक्षा के लिए शहीद होना जानते हैं। हम अपना धर्म छोड़कर जीने के लिए तैयार नहीं। आपका जैसे दिल करता है, कर लो।" *(सिक्ख इतिहास, पन्ना ४२७-२८)* इस समय बाबा जोरावर सिंघ तथा बाबा फतह सिंघ के चेहरों पर कोई भी डर का चिन्ह नहीं था। साहिबजादों के दिलेरी भरे उत्तर को सुनकर चारों ओर सन्नाटा छा गया। अहंकारी नवाब को गुस्सा आ गया। दीवान सुच्चा नंद ने और भड़काया कि "ये सांप के बच्चे हैं, ये रहम के लायक नहीं। बड़े होकर ये और भी मुश्किलें खड़ी करेंगे। शूलों के पैदा होते ही मुंह (कांटे) तीखे होते हैं। इन पर रहम मत करो।"

इतिहासकारों ने शेर मुहम्मद खां के भाई की मृत्यु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों से होने का जिक्र किया है। उसने अपने भाई की मृत्यु का बदला पिता की जगह मासूम बच्चों से लेने को कायरता माना। उसने साहिबजादों को मारने के विरोध में 'हा का नारा' मारा।

११ तथा १२ पौष को दो दिन साहिबजादों को कचहरी में बुलाया जाता रहा तथा लालच एवं डरावे दिये जाते रहे, परंतु साहिबजादे धर्म-पथ से नहीं डगमगाए। दीवान सुच्चा नंद ने जब साहिबजादों से पूछा कि "अगर आपको छोड़ दिया जाये तो आप क्या करोगे?" साहिबजादों का उत्तर था कि "हम बड़े होकर सिक्खों को इकट्ठा करके इस जुल्मी राज्य के विरुद्ध लड़ेंगे तथा तब तक लड़ते रहेंगे जब तक जालिमों का खातिमा नहीं कर लेते या खुद शहीद नहीं हो जाते।"

आखिर नवाब ने हुक्म दे दिया कि साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिन दिया जाये। सिर पर मृत्यु का साया मंडरा रहा था किंतु

गुरु जी के साहिबजादे अडोल थे। योगी अल्ला यार खां के शब्दों में :

हाथों में हाथ डाल के दोनों वे नौनिहाल।
कहते हुए जुबां से बढ़े 'सति श्री अकाल'।
चिहरों पे गम का नाम न था और न था मलाल।
जा ठहरे सर पे मौत के, फिर भी न था ख़्याल।१०७। . . .
हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का हैं पौधा लगा चले।
गद्दी से ताजो-तख़्त बस अब कौम पायेगी।
दुनिया से जालिमों का निशां तक मिटायेगी।१०९।

नवाब के हुक्म के अनुसार १३ पौष को साहिबजादों को दीवार में चिन कर शहीद कर दिया गया। अंतिम सांस तक वे वाहिगुरु का जाप करते रहे। उन्होंने चढ़दी कला में रहकर मौत को गले से लगा लिया। पोतों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने अकाल पुरख के चरणों में शुक्राने की अरदास की तथा परलोक गमन कर गये। सरकारी शर्त के अनुसार दीवान टोडरमल ने मोहरें बिछाकर जमीन खरीदी और छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी के मृतक शरीरों का पूर्ण मर्यादा व सत्कार के साथ अंतिम संस्कार कर दिया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा श्री जोती सरूप साहिब' सुशोभित है।

छोटे साहिबजादों की अद्वितीय शहादत की दर्दनाक व्यथा नूरा माही नाम के कासद ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को राय कल्हा के निवास-स्थान पर रो-रोकर हिचकियां लेते हुए सुनाई तो सुनने वालों की चीखें निकल गईं। गुरु जी अडोल अपने लखते-जिगरों की शहीदी तथा माता जी के परलोक-गमन कर जाने का वृत्तांत सुनते रहे। वार्ता सुनने के पश्चात आपने तीर से कांसी का पौधा उखाड़ा और फरमाया कि अब मुगल राज्य की जड़ उखड़ जानी है। जिस राज्य में मासूमों पर जुल्म हों वो राज्य खत्म हो गया समझो। इस संदर्भ में प्रिंसीपल हरिभजन सिंघ लिखते हैं कि साहिबजादों की लासानी शहादत की घटना मुगलों के जुल्मी राज्य की जड़ उखाड़ने का सबसे बड़ा कारण बनी। छोटे साहिबजादों के इस बड़े साके ने सिक्खी के महल की नींव और मजबूत की तथा धक्केशाही करने वाले ऐसे राज्य की जड़ें उखाड़ने के लिए सिंघों में बेपनाह जोश तथा दृढ़ता का संचार किया। आखिर खत्म हो गया वो मुगल राज्य तथा खत्म हो गये इसलाम के जालिम सूबेदार वजीर खां जैसे अनेकों अत्याचारी। छोटे साहिबजादों की शहादत (गवाही) आज भी लाखों सादिक दिलों में धर्म पर कुर्बान होने की रूह भरती तथा जगत-कल्याण के लिए प्रकाश-स्तंभ का काम कर रही है और करती रहेगी। साहिबजादों की अद्वितीय शहादत से ऐसी जागृति आई कि निरीह जनता ने गुरु जी से अमृत की दात लेकर हिंदोस्तान में से मुगल हकूमत के पैर उखाड़ दिये। आज भी कौम को साहिबजादों की लासानी शहादत से आदर्श नेतृत्व लेना चाहिए। मौजूदा समय में जो गिरावट आई है उसको रोकने के यत्न दृढ़ता से करने चाहिए। हमारा साहिबजादों का शहीदी दिवस मनाना तभी सार्थक है अगर साहिबजादों द्वारा छोड़े पद-चिन्हों पर चलने का प्रण करें तथा नेक नीयत से उस प्रण को निभायें!



चार साहिबजादों की लासानी शहादत

*-स. गुरप्रीत सिंघ**

सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी ने जनमानस को सदैव सात्विक मार्ग पर निर्भय होकर दृढ़ इरादे से चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने लोगों को सांसारिक जिम्मेदारियों से डर कर, घर-बार त्याग कर वन में जाने की बजाये सत्य-मार्ग पर चलते हुए परमात्मा को पाने की शिक्षा दी। श्री गुरु नानक साहिब ने सत्य-मार्ग अपनाने तथा प्रभु-प्रेम में खुद को रंगने के लिए निम्नलिखित आह्वान दिया :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

पंचम पातशाह ने जब्र-जुल्म का विरोध करते हुए पावन शहीदी देकर गुरु नानक साहिब के उपर्युक्त फरमान को स्वीकार कर श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। छठम पातशाह ने भी अन्याय के विरुद्ध कई जंगें लड़ीं। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भी हिंदू धर्म की रक्षा हेतु तथा मुगल सरकार के अन्याय एवं अत्याचार का कड़ा प्रतिरोध करते हुए स्वयं को न्यौछावर कर दिया। कुर्बानियां करने में दशमेश पिता का तो पूरे विश्व में कोई सानी नहीं है। यही नहीं, पूरा सिक्ख इतिहास ही शहीदियों की गाथाओं से भरा पड़ा है।

साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा जनमानस में व्याप्त हर प्रकार की भेद-भावना को समाप्त करने, वहमों-भ्रमों को तोड़ने, सामाजिक रूढ़ियों को गहरी चोट मारने हेतु सिक्ख धर्म को विलक्षण स्वरूप बख्शिश करते हुए खालसा पंथ की सृजना की। उन्होंने लोगों की भलाई की खातिर कई प्रकार की विकासगत गतिविधियां शुरू कर दीं। गुरु जी की बढ़ती प्रसिद्धि एवं शक्ति देखकर पहाड़ी राजाओं तथा मुगल सरकार में ईर्ष्या रूपी हुताशन दहकने लगी थी। वे मिलकर गुरु जी की शक्ति को खत्म करने पर तुले हुए थे। उन्होंने गुरु जी से अनंदपुर साहिब का किला खाली करवाने के लिए कई हमले किये। जब हर बार मुगल सेना को हार का मुंह देखना पड़ा तो उसने एक सांझा विशाल संगठन तैयार कर अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। घेरा कई महीनों तक चलता गया। किले के अंदर सिक्खों को खाद्य-सामग्री की कमी आने लगी। भूख से सिक्खों की हालत दिन-ब-दिन नाजुक होती जा रही थी। भूख और प्यास से विह्वल होकर कुछ सिक्खों ने माता गुजरी जी के जरिए गुरु जी को अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने का निवेदन किया। उधर मुगल सेना कुरान की कसमें खाकर लिखित संदेश भेज रही थी कि अगर गुरु जी अनंदपुर साहिब छोड़ दें तो उनको बेरोक जाने दिया जायेगा तथा गुरु जी और उनकी सेना को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुंचाई जायेगी। गुरु जी को मुगल सेना पर जरा भी भरोसा नहीं था। गुरु जी सिक्खों की नाजुक हालत देखकर किला छोड़ने को तैयार हो गये।

**प्रूफ रीडर, गुरमति ज्ञान।*

जब गुरु जी एवं उनकी खालसा सेना ने अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा तब मुगल सेना ने अपने वादे एवं कसमें तोड़कर उनका पीछा करना शुरू कर दिया और परिणामस्वरूप सरसा नदी के तट पर घमासान युद्ध हुआ। अनपेक्षित युद्ध के कारण ऐसा माहौल बना कि गुरु जी का परिवार आपस में बिछुड़ गया। बड़ी विडंबना की बात है कि उधर सरसा नदी में बाढ़ भी आई हुई थी। नदी पार करते समय बहुत सारे सिक्ख, बहुमूल्य साहित्य एवं सामान नदी की भेंट चढ़ गया। गुरु जी बड़े दो साहिबजादे कुछ सिंघों को साथ लिए मुगलों से लोहा लेते हुए चमकौर साहिब पहुंच गये। यहां पर युद्ध करते हुए बड़े साहिबजादे साथी सिंघों सहित शहीदी-जाम पी गये। उधर माता गुजरी जी और छोटे साहिबजादे--बाबा जोरावर सिंघ एवं बाबा फतह सिंघ को गुरु-घर का रसोइया गंगू मिल गया वो उन्हें अपने गांव सहेड़ी ले गया। वह माता जी के पास आभूषणों व मोहरों की थैली देखकर लोभवश हो गया। रात को उन्हें सोते हुए देखकर उसने उनकी आभूषणों व मोहरों वाली थैली चुरा ली। सुबह उठकर जब माता गुजरी जी ने पूछा तो वो 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' वाली बात कहने लगा कि एक तो मैंने आपको पनाह दी, दूसरा आप मुझ पर झूठी लांछन लगा रहे हो। उसने अपने झूठ को छुपाने तथा सरकार से इनाम पाने के लिए मोरिंडा कोतवाली के कोतवाल को खबर करके माता गुजरी जी और दोनों साहिबजादों को गिरफ्तार करवा दिया। कोतवाल ने माता जी तथा साहिबजादों को सरहिंद के सूबेदार वजीर खां के पास जा हाजिर किया। सर्द ऋतु की भीष्ण शीत में उन्हें ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। साहस और धैर्य की मूर्ति माता गुजरी जी अपने पोतों को पंचम पातशाह एवं दादा-गुरु नवम् पातशाह की बहादुरी भरी कहानियां सुनाकर समझाती हुई कहती हैं, "मेरे बच्चो! तुमने भी अपने पूर्वजों की तरह धर्म पर आंच नहीं आने देनी। धर्म की आन, शान इसी तरह बरकरार रखनी है।" दादी मां की साहस भरी शिक्षा पाकर साहिबजादों के इरादे और भी दृढ़ एवं मजबूत हो गये।

अगले दिन साहिबजादों को वजीर खां की कचहरी में पेश किया गया। उन्होंने कचहरी में दाखिल होते ही ऊंचे स्वर में 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि' गजाई। यह सुनकर सूबा सरहिंद आश्चर्यचकित रह गया। साहिबजादों को धर्म के पथ से भटकाने के लिए कई प्रकार के लोभ-लालच दिये गये, किंतु सब असफल! फिर उनको उनके पिता-गुरु और बड़े साहिबजादों की मृत्यु का झूठा समाचार सुनाकर डराने की कोशिश की गई। इस वार्तालाप को कवि संतोख सिंघ ने इस प्रकार वक्तव्य किया है:

साहिबजादिओ पिता तुहारा।
गढ़ चमकौर घेर गहि मारा।
तहि तुमरे दै भ्रात प्रहारे।
संगी सिंघ सकल सो मारे।

साहिबजादों ने इसका उत्तर देते हुए निर्भय एवं निश्चिंत आवाज में कहा :

श्री सतिगुरू जो पिता हमारा।
जग महिं कौन सके तिंह मारा।
जिम आकाश को किआ कोई मारहि।
कौन अंधेरी को निरवारहि।

सूबे सरहिंद ने अपने मंतव्य की पूर्ति हेतु आशा की किरण नजर न आती देखकर भूखे-प्यासे साहिबजादों को वापिस ठंडे बुर्ज में भेज दिया। अगले दिन फिर कचहरी में पेश किया गया। साहिबजादों को कई तरह के लालच दिये

गये डराया, धमकाया गया, इसलाम कबूल करने के लिए आदिष्ट किया गया, किंतु वे अडिग एवं अडोल खड़े रहे।

सूबा सरहिंद ने मलेरकोटले के नवाब शेर मुहम्मद खां को उकसाते हुए कहा कि अगर तू चाहे तो इन बच्चों को मारकर इनके बाप के हाथों मारे गये अपने भाई की मृत्यु का बदला ले सकता है। शेर मुहम्मद खां ने मासूम बच्चों की जान लेना घोर पाप एवं कायरता समझते हुए साफ इन्कार कर दिया और कचहरी से बाहर आ गया :

बदला ही लेना होगा तो हम लेंगे बाप से।
महफूज रखे हमको खुदा ऐसे पाप से।

उधर सुच्चा नंद बैठा सोच रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि साहिबजादों को छोड़ ही दिया जाये। उसने सूबा सरहिंद को भड़काते हुए कहा, "ये सांप के बच्चे हैं। इनको पैदा होते ही मार दिया जाए तो अच्छा है, बड़े होकर डंक ही मारते हैं। इन्हें छोड़ना कोई समझदारी वाली बात नहीं। हमें इन्हें जल्द से जल्द खत्म कर देना चाहिए।" सूबा सरहिंद ने दीवान सुच्चा नंद की बातों में आकर काजी को जोर देकर साहिबजादों के विरुद्ध फतवा जारी करवा दिया।

सूबा सरहिंद ने साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिनने का आदेश दिया। साहिबजादों को यह सुनकर भी कोई डर, कोई चिंता नहीं हुई। वे बिलकुल बेखौफ और प्रसंनचित्त होकर खड़े रहे :

थी प्यारी सूरतों से शुजाअत बरस रही।
नन्हीं सी सूरतों से थी जुरअत बरस रही।
रुख पर नवाब के थी शकावत बरस रही।
राजों के मुंह पे साफ थी लाअनत बरस रही।

अगली सुबह होते ही सिपाही साहिबजादों बाबा जोरावर सिंघ एवं बाबा फतह सिंघ को लेने जाते हैं, दादी-माता गुजरी जी अपने लाडले पोतों को तैयार करती हैं। उस वियोग समय का मार्मिक चित्र कवि अल्ला यार खां योगी ने 'शहीदानि-वफा' में इस प्रकार कलमबद्ध किया है:

जाने से पहले आओ गले लगा तो लूं।
केसों में कंघी कर दूं जरा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्हीं सी कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुमको दूल्हा बना तो लूं।

आखिर वो दुखदायक एवं वियोगमयी घड़ी आ ही गई। साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिन दिया गया। दीवार जब साहिबजादों की छाती तक पहुंची तो गिर गई, जिसके कारण मृदुल कलियों की भांति शरीर बेहोश हो गये। फिर शाशल बेग एवं बाशल बेग नामक जल्लादों ने मासूम साहिबजादों का सर कलम कर दिया। इस तरह छोटे साहिबजादे शहादत का जाम पी गये, किंतु मुगल सरकार की ईन नहीं मानी। यह साका मानवतावादी धर्म की विजय और अत्याचारी एवं दुष्टतापूर्ण शासन की पराजय को प्रत्यक्ष रूप में बयान करता है। जब साहिबजादों की शहादत का शोक समाचार माता गुजरी जी को पहुंचा तो वे भी ठंडी आह भर कर परमात्मा को याद करते हुए गुरु-चरणों में जा विराजीं। माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादों का अंतिम संस्कार करने हेतु टोडर मल नामक व्यापारी ने सोने की मोहरें बिछाकर सरकार से जगह मोल खरीदी और माता जी एवं छोटे साहिबजादों का अंतिम संस्कार किया।



सिक्ख इतिहास की महान माता : माता गुजरी जी

*-स. बिकरमजीत सिंघ**

सिक्ख धर्म की ऐतिहासिक और धार्मिक जगत की महान नारी शख्सियतों में माता गुजरी जी का नाम सबसे पहली कतार में आता है। माता गुजरी जी के घर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसे महान लोकनायक ने जन्म लिया, जिन्होंने भारत की तकदीर बदलने में महान योगदान डाला।

माता गुजरी जी, जिनको सिक्ख इतिहास में एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान हासिल है, का जन्म करतारपुर निवासी भाई लालचंद तथा माता बिशन कौर के घर हुआ। माता गुजरी जी की जन्म-तारीख संबंधी विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं, मगर ज्यादातर आप जी का जन्म १६२३-२४ ई में हुआ मानते हैं।

आप जी का विवाह छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब (नवम पातशाह) के साथ हुआ। वास्तव में गुरु-घर के साथ रिश्ता जुड़ने का मुख्य कारण माता गुजरी जी का बचपन में आध्यात्मिक रुचियों वाला होना था। इसके अलावा माता गुजरी जी छोटी आयु में ही अपने माता-पिता के साथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दरबार में जाते थे। माता गुजरी जी शादी के बाद 'गुरु का चक्क' (श्री अमृतसर) आ गये और 'गुरु के महल' नामक स्थान पर रहने लग गये। कुछ समय यहां रहने के पश्चात हालातों को मद्देनज़र रखते हुए (क्योंकि उस समय मुगलों के साथ सिक्खों की जंग के दौर शुरू हो चुके थे) करतारपुर आ गए। इसके उपरांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आज्ञा पर कीरतपुर साहिब में निवास कर लिया। यहां पर रहते हुए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कुछ समय के पश्चात ज्योति-जोत समा गए। इसके पश्चात श्री गुरु तेग बहादर साहिब और माता गुजरी जी गांव बकाला (बाबा बकाला) चले गये। माता गुजरी जी ने यहां रहकर पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथ मिलकर सिक्खी के प्रचार हेतु भरपूर योगदान दिया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गुरगद्दी की जिम्मेदारी मिलने के बाद गुरु जी प्रचार हेतु उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और आसाम की यात्रा पर चले गए। श्री गुरु तेग बहादर साहिब माता गुजरी जी को उनके भ्राता भाई किरपाल चंद के साथ पटना साहिब में ठहरा गए, जहां कुछ समय बाद माता गुजरी जी ने एक महान तेजस्वी बाल को जन्म दिया, जिसका बचपन का नाम 'गोबिंद राय' रखा गया। प्रचार-भ्रमण के बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब कीरतपुर साहिब वापिस आ गए और श्री अनंदपुर साहिब नगर बसा कर परिवार को पटना साहिब से यहां बुला लिया। यहां से ही गुरु जी ने कशमीरी पंडितों की पुकार पर दिल्ली जाकर शहीदी दे दी और 'हिंद की चादर' के रूप में सत्कारे जाने लगे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के बाद जो धैर्य माता गुजरी जी ने दिखाया उसकी मिसाल दुनिया की महान माताओं के इतिहास में

***S/o s. Ranjeet Singh, 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar. M : 9478896372**

और कहीं नहीं मिलती। माता गुजरी जी के जीवन में यह कठिन परीक्षा का समय था, क्योंकि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आयु केवल नौ वर्ष थी और साथ ही समस्त सिक्ख पंथ की जिम्मेदारी माता जी के कंधों पर आ गई थी।

चाहे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अद्वितीय दैवी प्रकाश और सूझबूझ के मालिक थे फिर भी माता गुजरी जी ने अपने अंदर छुपे मां के कोमल एवं ममतामयी हृदय के कारण उन्हें अपनी छत्र-छाया में रखा। इसके साथ-साथ माता गुजरी जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शिक्षा का प्रबंध पटना रहते हुए ही कर दिया था और मामा किरपाल चंद की ड्यूटी भी इस कार्य हेतु लगाई थी। अनंदपुर साहिब में भी माता जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को निरंतर शिक्षा देने के प्रयास और प्रबंध जारी रखे। यह माता गुजरी जी की दूरंदेशी सोच थी कि उन्होंने गुरु जी की शस्त्र और शास्त्र-विद्या को लगातार जारी रखा, क्योंकि माता जी खुद महान सूझबूझ वाले थे और उन्हें भविष्य में आने वाली चुनौतियों का भली-भांति आभास था। माता जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को मदरस्से और पाठशाला में संस्कृत तथा फारसी भाषा का ज्ञान भी दिलवाया। गुरबाणी का ज्ञान खुद उन्होंने श्री गोबिंद सिंघ जी को दिया।

इस सब के दौरान उस समय गुरु-घर के मसंदों ने गुरु-घर के विरुद्ध मनमर्जी करनी शुरू कर दी जो कि माता गुजरी जी के सामने एक बड़ी चुनौती बन कर सामने आयी। माता गुजरी जी ने बड़ी सूझबूझ से मसंदों के खिलाफ हुकमनामे जारी कर उनकी चालों को कामयाब न होने दिया। माता गुजरी जी की इस कार्यवाही ने जहां गुरु-घर के ईर्ष्यालुओं का मुंह मोड़ा वहां इस बात से माता जी की शख्सियत में निडरता के गुण होने के प्रमाण भी मिलते हैं।

ऐसी चुनौतियों के साथ-साथ माता गुजरी जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की तरफ से अपना ध्यान बिलकुल नहीं हटाया। माता जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जुल्म के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करते रहे।

समय अबाध गति से चलता रहा। माता गुजरी जी के आशीर्वाद और शिक्षा का सदका श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर एक विलक्षण कारनामा कर दिखाया। उन्होंने १६९९ ई की वैसाखी को नवीन 'खालसा पंथ' की सृजना की और दुनिया के समस्त धर्मों में से अलग तथा नया धर्म चलाया। गुरु जी ने हिंदोस्तान की मजलूम और दबी-कुचली जनता को स्वाभिमान से जीना तथा मुगलों के अत्याचारों का डटकर मुकाबला करना सिखाया एवं धर्म के पथ पर चलने वालों के लिये नई मिसालें कायम कीं।

गुरु जी की इन बड़ी प्राप्तियों, चाहे वे धर्म तथा राजनीतिक क्षेत्र में थीं, को हासिल करने के पीछे सबसे बड़ा हाथ और प्रेरणा माता गुजरी जी की ही थी। पंजाबी के प्रसिद्ध ढाडी और उपन्यासकार ज्ञानी सोहण सिंघ 'सीतल' के कथन के मुताबिक : "माता गुजरी जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को आवश्यकतानुसार कई प्रकार के सुझाव देती थीं, हुक्म नहीं और न ही किसी प्रकार का कोई दबाव गुरु जी पर डालती थीं। वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सर्वशक्तिमान और श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी का योग्य अधिकारी अथवा स्वरूप समझती थीं। एक सुपुत्र से ज्यादा माता जी के दिल में 'गुरु-भावना' थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माता

गुजरी जी को सबसे बढ़िया और अच्छा सलाहकार समझते थे। हजूर, माता जी की आज्ञा का सदैव पालन करते थे। गुरु जी की शिक्षा-दीक्षा के सबसे बड़े निगरान माता गुजरी जी ही थे।"

माता गुजरी जी का ही प्रताप था कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दुनिया के महान साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। माता गुजरी जी के सुझाव से ही गुरु जी कुछ वर्षों के लिये पाउंटा साहिब आ गए। वहां रहकर ही गुरु जी ने बाणी-रचना की। पाउंटा साहिब निवास के दौरान ही गुरु जी ने भंगाणी का युद्ध लड़ा और विजय प्राप्त कर अनंदपुर साहिब आ गए।

किसी भी बालक की शख्सियत को निखारने में उसकी मां का ही विशेष योगदान होता है। माता गुजरी जी जैसी माता युगों तक धन्य ही कहीं जायेंगी जिन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसे सपूत को जन्म दिया और महान योद्धा बनाया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख्सियत का बहुपक्षीय होना उनकी माता जी के कारण ही था।

यदि माता गुजरी जी के सम्पूर्ण जीवन के इतिहास की तरफ ध्यान दिया जाए तो दुनिया में कोई भी ऐसी महिला शख्सियत नहीं होगी जिसकी तुलना माता गुजरी जी के साथ की जा सकती हो।

सरहिंद के ठंडे बुर्ज में जब सूबेदार वजीर खां द्वारा माता गुजरी जी और छोटे साहिबजादों को कैद किया गया उस समय माता गुजरी जी ने छोटे साहिबजादों को आत्मिक तौर पर खूब बलवान बना दिया था।

साहिबजादों की शहादत के बाद ठंडे बुर्ज में कैद माता गुजरी जी ने भी प्राण त्याग दिए। माता गुजरी जी का अंतिम संस्कार छोटे साहिबजादों के साथ दीवान टोडर मल ने किया। यह घटना दिसंबर, १७०४ ई की है।

साहिबजादों की बेमिसाल शहीदी और माता गुजरी जी के जीवन से यह संदेश मिलता है कि वर्तमान युग के बुजुर्गों को बच्चों का पालन-पोषण केवल लाड लड़ाने आदि से ही नहीं करना चाहिए बल्कि बच्चों में धर्म के प्रति दृढ़ता और आत्मिक बल का संचार भी करना चाहिए। माता गुजरी जी के जीवन-इतिहास में से उपरोक्त गुणों को धारण करके ही हम उस महान माता को सच्चे श्रद्धा-सुमन और सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। 

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

माता गुजरी जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय

*-बीबी दविंदर कौर**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की धर्म-पत्नी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के माता जी, माता गुजरी जी का समस्त जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उनके पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब को हिंदू धर्म की रक्षा के लिए तथा मुगलों द्वारा किये जा रहे जुल्मों के विरुद्ध अपनी कुर्बानी देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जुल्मों का सामना करते हुए अपना परिवार शहीद करवा दिया। माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबजादों ने मुगलों द्वारा किये जा रहे जुल्मों के विरोध में तथा धर्म परिवर्तन न करते हुए शहीदी प्राप्त की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा तो मुगलों की फौज ने खाई हुई कसमें तोड़कर गुरु जी की फौज पर हमला कर दिया। गुरु जी का सारा परिवार बिछुड़ गया। माता गुजरी जी छोटे दो साहिबजादों के साथ मोरिंडा की तरफ चले गये। माता सुंदरी जी दिल्ली की तरफ चले गये। माता गुजरी जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का इस के बाद आपसी मेल नहीं हुआ। छोटे दो साहिबजादे व माता गुजरी जी सरहिंद (फतहगढ़ साहिब) में शहीद हो गये थे।

सिक्ख लहर में माता गुजरी जी का योगदान विलक्षण तथा महान है। माता गुजरी जी का जन्म भाई लालचंद के घर, माता बिशन कौर के उदर से करतारपुर (जिला कपूरथला) में हुआ था। आपकी शादी श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथ १५ आश्विन, संवत् १६८९ को हुई। शादी के बाद माता गुजरी जी श्री अमृतसर रहने लगे। उन्होंने अपने अच्छे स्वभाव तथा सद्‌गुणों के कारण सारे परिवार का दिल जीत लिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सन् १६४४ में ज्योति-जोत समा जाने के बाद आप अपने पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा सास माता नानकी जी के साथ गांव बकाला आकर रहने लगे। यहां आकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब प्रभु-भक्ति में लीन हो गये तथा माता गुजरी जी घर की समस्त जिम्मेदारियां निभाने लगीं। गुरगद्दी पर आसीन होने के बाद गुरु साहिब कीरतपुर साहिब गये। आस-पास रमणीक वातावरण होने के कारण पांच सौ रुपये में जमीन खरीदी तथा अपनी माता, माता नानकी जी के नाम से 'चक्क नानकी' नामक नगर की नींव रखी, जो कि बाद में 'अनंदपुर साहिब' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पंजाब में रहते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को अपने नजदीकी रिश्तेदारों--सूरजमल व धीरमल जो कि गुरगद्दी के दावेदार बने थे, के विरोध का सामना करना पड़ा। इसके बाद गुरु जी पूरब दिशा में सिक्खी का प्रचार करने चले गये। अपनी मां माता नानकी जी तथा सुपत्नी माता गुजरी जी को पटना साहिब छोड़कर श्री गुरु तेग बहादर साहिब बंगाल तथा आसाम की यात्रा पर चले गये। पटना में ही माता गुजरी जी ने २२ दिसंबर, १६६६ को एक

*८९७, फेज-१०, मोहाली-१६००६२

बाल को जन्म दिया जिसका नाम 'गोबिंद राय' रखा गया। बाद में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बुलावे पर माता गुजरी जी अपनी सास माता नानकी जी के साथ लखनौर पहुंचीं। यहां से वे अनंदपुर साहिब चले गये। यही पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब दिल्ली से आते समय मालवा क्षेत्र की संगत को निहाल करते हुए उन्हें आ मिले। कशमीरी पंडितों की प्रार्थना पर उनकी रक्षा के लिए जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब औरंगजेब से मिलने दिल्ली चले तो इस विछोड़े की घड़ी को माता गुजरी जी ने बड़े ही हौसले तथा दिलेरी के साथ निभाया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दिल्ली में शीश बलिदान के बाद ९ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को योग्य दिशा-निर्देश प्रदान करने का काम माता गुजरी जी के जिम्मे आ गया। माता गुजरी जी ने सिक्खी-सिद्धांत व सिक्खी आदर्श श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में कूट-कूटकर भर दिये।

अनंदपुर साहिब में आम तौर पर माहौल युद्ध वाला ही बना रहता था, इसलिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को प्रशिक्षण ऐसा मिला जिससे उनमें 'संत-गुणों' के साथ-साथ 'सिपाही' वाले गुण भी भर गए और वे 'संत-सिपाही' कहलाने लगे। केवल अपने सुपुत्र के ही नहीं बल्कि अपने पोतों के चरित्र-निर्माण में भी माता गुजरी जी ने बहुत बड़ा योगदान डाला। यही कारण है कि उनके पोते अपने पिता व दादा के पद्-चिन्हों पर चलते हुए धर्म, देश व कौम के लिए अपनी जानें कुर्बान कर गये।

मुगल सेना तथा पहाड़ी राजाओं द्वारा लंबे समय तक अनंदपुर साहिब की घेराबंदी के बाद गुरु साहिब ने अनंदपुर साहिब को छोड़ने का फैसला कर लिया। मुगलों तथा पहाड़ी राजाओं द्वारा पीछे से हमला करने के कारण सरसा नदी के किनारे आकर गुरु साहिब का परिवार बिखर गया। माता गुजरी जी व छोटे साहिबजादों-बाबा जोरावर सिंघ तथा बाबा फतह सिंघ को उनका रसोइया गंगू मोरिंडा, जिला रोपड़ के पास अपने गांव सहेड़ी ले गया। वहां जाकर लालच में फंसकर गंगू ने इन्हें सरहिंद के सूबेदार वजीर खान के यहां पकड़वा दिया और उन्हें सरहिंद किले के ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया, जहां माता जी व छोटे साहिबजादों को भारी ठंड में बिना गर्म कपड़ों के रखा गया। इसी बुर्ज में माता गुजरी जी अपनी जिंदगी के अंतिम दिनों में अपने पोतों को अपने धर्म पर दृढ़ रहने की शिक्षा देकर उन्हें और अधिक मजबूत कर रही थीं। वजीर खान के अहिलकारों द्वारा उन्हें कई प्रकार के लालच दिये गये परंतु गुरु जी के लाडले अपने धर्म पर अडिग रहे। आखिरकार वजीर खान द्वारा इन्हें जिंदा दीवार में चिनवा कर शहीद करने का हुक्म जारी कर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ये शूरवीर सुपुत्र सिक्ख धर्म की मान-मर्यादा व रिवायतों को कायम रखते हुए शहीदी पा गये। माता गुजरी जी भी यातनाओं को झेलते हुए अकाल पुरख को प्यारे हो गये। प्रति वर्ष इन महान शहीदों की याद में गुरुद्वारा श्री फतहगढ़ साहिब में शहीदी जोड़-मेला लगता है, जहां पर लाखों श्रद्धालु माता गुजरी जी व छोटे साहिबजादों-बाबा जोरावर सिंघ व बाबा फतह सिंघ को श्रद्धा के फूल भेंट करते हैं।



शहीद बाबा संगत सिंघ जी

*–स. महिंदर सिंघ**

प्रसिद्ध लेखक सी. एच. पेन लिखता है, "जो दुनिया में रहकर बदियों से जूझते हैं वे विश्व धर्म के जुझारू होते हैं।" सिक्ख धर्म इन शब्दों की गवाही भरता है क्योंकि सिक्ख धर्म भक्ति तथा शक्ति का सुमेल है और इन दोनों वस्तुओं के सुमेल ने विश्व-चिंतकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है, क्योंकि समय-समय पर इस धर्म ने बहादुरों, शूरवीरों एवं योद्धाओं को जन्म दिया जिन्होंने गुरु साहिबान के दर्शाये उसूलों पर चलते हुए बदियों का डटकर मुकाबला किया। ऐसे ही एक बहादुर शूरवीर का जन्म सिक्ख धर्म में हुआ जो दशम पिता जी के हाथों से अमृत-पान करके भाई संगता से भाई संगत सिंघ जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शहीद बाबा संगत सिंघ जी का जन्म पटना साहिब में दशम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से चार महीने बाद १६ फाल्गुन, संवत १७२३ बिक्रमी को भाई रणीए जी के घर बीबी अमरो जी की कोख से हुआ। आप जी की माता बीबी अमरो जी ने बड़े खुशी भरे लहजे में कहा कि परमात्मा की कृपा से हमारे घर 'बंगेसर' ने जन्म लिया है। इसलिए जन्म से ही आपके नाम के साथ 'बंगेसर' शब्द जुड़ गया। यह 'बंगेसर' शब्द आप जी के नाम के साथ किस तरह जुड़ा, इसका निर्णय इतिहासकार इस तरह करते हैं :

१. ज्ञानी गुरबखश सिंघ "कलगी भाई संगत सिंघ जी नूं ही" में लिखते हैं कि बाबा संगत सिंघ के पूर्वज पुराने जमाने के जलंधर सूबे के गांव 'खेड़ी' फगवाड़े के नजदीक के रहने वाले थे, जिनके पूर्वज पहले बंगा में रहते थे, जिस कारण खेड़ी के निवासी बंगेसर या बंगसी अल्ल (गोत) से पुकारे जाते थे।
२. स. गुरबखश सिंघ (पंनवा) लिखते हैं कि बाबा संगत सिंघ जी का जन्म पटना में हुआ, परंतु इनका विरासती गांव तहसील फगवाड़ा जिला कपूरथला के पास है।

जलंधर से फगवाड़ा को जाते हुए चहेड़ू पुल से थोड़ा आगे जाकर दाएं हाथ एक छोटा-सा गांव खेड़ी आता है जिसको मुगल सरकार ने भाई संगत सिंघ जी का पुश्तैनी गांव होने के कारण ढह-ढेरी कर दिया, जो आज टीले के रूप में मौजूद है। यह सिक्ख कौम का बहुमूल्य इतिहास अपने सीने में समोये हुए है।

इसी गांव के भाई रणीआ जी तथा भाई जोधा जी के पिता भाई भानू जी हुए हैं, जिन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा लड़ी गई चारों जंगों में अपनी वीरता के जौहर दिखाये तथा गुरु-घर की निष्काम सेवा की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की संगत में बिना जातीय भेद-भाव के सब लोग शामिल थे। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों वे लोग अमृत-पान करके सिंघ सजे तथा उन्होंने वैरियों को करारे हाथ दिखाये। महिलाओं ने भी बहादुरी के जौहर दिखाये तथा प्यारी पुत्रियां होने का गौरव गुरु साहिब से प्राप्त किया।

इतिहास को पढ़ने के उपरांत पता चलता है कि बाबा संगत सिंघ जी का प्रारंभिक जीवन

**गांव व डाक: माहलां, तहसील : फिल्लौर, जिला जलंधर (पंजाब)।*

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

शहीद बाबा गुरबखश सिंघ जी

*-स. वरिआम सिंघ**

दिसंबर, १७६४ ई. में अहमदशाह अब्दाली ने हिंदोस्तान पर सातवां हमला किया। वास्तव में उसने इस बार नजीबे रुहेले की मदद के लिए दिल्ली जाना था क्योंकि वह वहां घिर चुका था। जवाहर सिंघ भगतपुरिये ने दिल्ली पर हमला करने तथा इस तरह अपने पिता की मृत्यु का नजीब-उद-दौला से बदला लेने के लिए खालसा जी से और मराठों से भी सहायता मांगी। मराठों का सरदार मलहार राव हुलकर तो खड़ा तमाशा ही देखता रहा परंतु दल खालसा का सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया पंद्रह हजार सिंघों सहित जवाहर सिंघ की मदद हेतु था। नजीब-उद-दौला ने अपने आप को मुसीबत में घिरा देखकर अब्दाली को संदेश भेज दिया था। अब्दाली को यह भी खबरें मिल चुकी थीं कि सिंघों ने पंजाब में दुर्रानियों का सफाया कर दिया है। सिंघों ने सरहिंद पर कब्जा कर लिया था। काबली मल्ल ने लाहौर में खालसा जी की ईन मान ली थी। जहान खान तथा सरबलंद खान, सियालकोट तथा रुहतास में सिंघों से बुरी तरह मार खा चुके थे। इन सारे हालातों को मुख्य रखकर अब्दाली ने अपने साथ कलात के बलोच हाकिम मौर नसीर खान को लिया तथा सिंघों के विरुद्ध जेहाद का नारा देते हुए हिंदोस्तान पर सातवां हमला बोल दिया।

इस समय सिंघ सरदार अलग-अलग मुहिमों पर चढ़े हुए थे तथा केंद्रीय पंजाब सिंघों से लगभग खाली ही था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया जवाहर सिंघ की सहायता हेतु दिल्ली में था। भंगी सरदार सांदल बार के क्षेत्र की तरफ थे। केवल सरदार चढ़त सिंघ ही सियालकोट था। उसने जब अब्दाली के लाहौर पहुंचने की खबर सुनी तो एकदम अचानक अब्दाली के कैंप पर हमला कर दिया। हमला इतना तेज एवं सख्त था कि दुर्रानियों को हाथों-पैरों की पड़ गई और उनका बहुत नुकसान हुआ। इस तरह सरदार चढ़त सिंघ अब्दाली से एक सफल टक्कर लेकर, फिर किसी मौके के इंतजार में एक तरफ हट गया।

अब्दाली को खबर मिली कि सिंघ श्री अमृतसर की तरफ गये हैं। सिंघों का पीछा करने के लिए उसने श्री अमृतसर की ओर चढ़ाई की। श्री अमृतसर श्री दरबार साहिब में उस समय लगभग तीस सिंघ ही थे तथा इनके जत्थेदार निहंग सिंघ बाबा गुरबखश सिंघ जी थे। बाबा गुरबखश सिंघ जी गांव लील (श्री अमृतसर) माझा क्षेत्र के निवासी थे तथा इन्होंने भाई मनी सिंघ जी से अमृत छका था। पक्के नित्तनेमी, रहित मर्यादा में परिपक्व तथा जहां भी कहीं जंग होता, हमेशा आगे होकर डटते थे।

अब्दाली के द्वारा श्री दरबार साहिब पर हमला करने की खबर सुनते ही निहंग सिंघ बाबा गुरबखश सिंघ जी तथा उनके तीस साथियों ने श्री दरबार साहिब की रखवाली के लिए तैयारी आरंभ कर दी। वे सभी श्री दरबार साहिब के सन्मुख शहीदी प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहे थे। किसी ने नीला बाणा (पहरावा) सजाया, किसी ने सफ़ेद और किसी ने केसरी:

*निदेशक, धार्मिक शिक्षा एवं खोज कार्य, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर-१४३००६

किसै पुशाक थी नीली सजाई,
किनै सेत किसै केसरी रंगवाई। . . . ।३५।

इन सब सिंघों ने अपने शस्त्र-वस्त्र सजा लिये। 'अनंदु साहिब' की पांच पउड़ियों का पाठ किया, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुकमनामा लिया, कड़ाह प्रशाद बांटा गया। ये सब तैयारियां एक विवाह की तरह की गईं। भाई रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

पंज पौड़ी सिंघ अनंद पढ़ायो,
गुर गणेश जिम ग्रंथ पुजायो।
बिआहि वांग कीयो जग्ग उछाहि,
सिंघन बहाइ खुलायो कड़ाहि।३८।

इस तरह पूरी तैयारी करके अकाल बुंगे से उतर कर बाबा गुरबखश सिंघ जी अपने साथियों सहित श्री दरबार साहिब माथा टेकने गये :

कर कंगनो, सिर सेहरो, मोढे धर तलवार।
तखतों उतर निहंग सिंघ, पूजन चलयो दरबार।४३।

और फिर सिंघों ने अरदास की :

हरिमंदर के हजूर इम खड़ कर करी अरदास।
सतिगुर सिक्खी संग निभै, सीस केसन के सास।४८। (वही)

इतने में अब्दाली की फौज परिक्रमा के पास पहुंच गई। सिंघ मात्र तीस परंतु अब्दाली की फौज की गिनती छत्तीस हजार थी। सिंघ जिस तरफ चल पड़ते दुश्मनों की कतारें खाली करते जाते। इस तरह वे श्री दरबार साहिब की रखवाली के लिए दुश्मन से लोहा लेते, एक-दूसरे से आगे होकर शहीद होते गये। निहंग सिंघ व बाबा गुरबखश सिंघ जी सबको हौसला दे रहे थे और आगे ही आगे बढ़कर लड़ने की प्रेरणा कर रहे थे। उनके पांव आगे ही आगे जाते हैं:

पट आगै पत ऊबरे पग पाछे पत जाइ।
बैरी खंडै सिर धरै, फिर कया तकन सहाइ।५८।

दुर्रानियों के सिर संजोअ से ढके हुए थे। इधर सिंघों के पास शरीर ढकने के लिए पूरे वस्त्र भी नहीं थे। दुर्रानियों के पास लंबी मार करने वाले हथियार, तीर, बंदूक आदि थे। सिंघों के पास तेगें एवं बरछे ही थे, मगर सिंघों के मन में अपने पवित्र धर्म-स्थान की रक्षा के लिए एक दूसरे से आगे होकर शहीद होने की उमंग थी :

आप बिच ते करे करार,
तुहि ते अगै मैं होगु सिधार।५२।

सिंघ के इस जोश ने दुश्मन को धूल चटा उनकी हाय-तौबा करवा दी। जब काफी सिंघ शहीद हो गये तो बाबा गुरबखश सिंघ जी खुद तेग लेकर वैरी के सिर पर जा धमके। वैरियों के शरीरों को संजोअ सहित चीरते हुए शत्रुओं की कतारें खाली करते गये। शत्रु ढाल का सहारा लेते थे, किंतु सिंघों ने ढाल भी छोड़ दी। 'मुंह छुपाकर नहीं अब सन्मुख होकर लड़ना है।' गिलजई अब दूर से ही गोलियों या तीरों से लड़ रहे थे, पास आने की जुर्रत नहीं कर रहे थे।

बाबा गुरबखश सिंघ जी मैदान में पहुंचकर लड़ रहे थे। दुश्मनों के तीर उनके शरीर को चीरते जाते। असंख्य जख्म और उनमें से खून ऐसे बह रहा था जैसे कोहलू में से रस-धारा बह रही हो या जैसे बड़ी मश्क में छेद हुए हों तथा उसमें से चहुं ओर फव्वारे छूट रहे हों:

जनु बड मछक सु भए सलाख,
छुटे फुहारे चहूं वल झाक। . . . ७५।

सिंघों का शरीर रक्त-हीन हो रहा है, परंतु पैर फिर भी आगे ही जाते हैं। चारों ओर से घेरा पड़ गया। गिलजइयों ने चहुं ओर से नेजे बरसाये तथा सिंघ जी घुटनों के बल गिरे, किंतु हाथ से तेग नहीं छोड़ी, चलती ही रही। आखिर, अंतिम समय आ गया और वे गुरु-चरणों में जा पहुंचे। 'जंगनामे' के कर्ता काजी नूर मुहम्मद ने यह सारा युद्ध आंखों से देखा। वो इस हमले के दौरान अब्दाली के साथ ही था। इस साके के बारे में नूर मुहम्मद लिखता

है : "जब बादशाह तथा शाही लशकर चक्क (गुरु) (श्री अमृतसर) पहुंचा तो कोई काफिर वहां नजर नहीं आया। थोड़े-से आदमी गढ़ी (बुंगे) में टिके हुए थे कि अपना खून बहा दें। उन्होंने अपने आप को गुरु से कुर्बान कर दिया। जब उन्होंने बादशाह तथा इसलामी लशकर को देखा तो वे सभी बुंगे में से निकल पड़े। वे सभी गिनती में तीस थे। वे जरा भी डरे एवं घबराये नहीं। उन्हें न कत्ल होने का डर था न मृत्यु का भय। वे गाजियों से उलझ पड़े तथा उलझन में अपना खून बहा गये। इस तरह ठीक सारे ही (सिंघ) कत्ल हो गये।"

यह है काजी नूर मुहम्मद का आंखों देखा बयान कि कैसे मात्र तीस सिंघों ने अब्दाली की तीस हजार अफगानी तथा बलोच फौज का मुकाबला किया और मृत्यु से निडर होकर गुरु के नाम पर अपनी जानें वार गये।



शहीद बाबा संगत सिंघ जी *(पृष्ठ २९ का शेष)*

पटना शहर में दशमेश पिता जी के साथ हंस-खेल कर तथा बाल-लीला के कौतुक देखते हुए गुजरा। दशमेश पिता जी के साथ रहकर भाई संगत सिंघ ने शस्त्र-विद्या, निशानेबाजी, नेजेबाजी तथा घोड़ों की दौड़ों में विशेष महारत हासिल की। सन् १६९९ की वैसाखी को जात-पात की भावना को जड़ से खत्म करके दशमेश पिता जी ने संगत को खंडे-बाटे का अमृत छकाया तो बाबा संगत सिंघ जी और उनके साथियों--भाई मदन सिंघ, भाई काठा सिंघ, भाई राम सिंघ ने कलगीधर पिता के हाथों से अमृत-पान किया तथा बाद में गुरु साहिब ने बाबा संगत सिंघ जी को श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए सिक्ख पंथ का प्रचार करने लिए मालवा क्षेत्र का सिक्ख पंथ का प्रचारक नियुक्त किया।

चमकौर साहिब की जंग से पहले बाबा संगत सिंघ जी ने गांव बस्सी कलां से साहिबजादा अजीत सिंघ के साथ एक ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाकर लाने, भंगाणी की जंग, अगंमपुरे की जंग, सरसा की जंग में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाये थे। चमकौर साहिब की जंग सिक्ख इतिहास में अहम पड़ाव साबित हुई। ऐतिहासिक कृतियों के अनुसार गुरु साहिब १७०४ ई को अनंदगढ़ का किला छोड़ने के उपरांत चमकौर साहिब पहुंचे। चमकौर साहिब की जंग हुई, जिसमें बहुत सारे सिंघ शहादत का जाम पी गये। शेष बचे ग्यारह सिंघों में से पांच सिंघों ने मिलकर प्रस्ताव पारित किया, क्योंकि वे जानते थे कि इस कठिन समय में सिक्ख कौम को गुरु साहिब के नेतृत्व की जरूरत है। पांच सिंघों ने गुरु साहिब को चमकौर साहिब की गढ़ी छोड़ जाने का हुक्म दिया। गुरु साहिब ने खालसे को गुरु-रूप जानकर गढ़ी छोड़ जाने का हुक्म प्रवान कर लिया। गुरु जी ने अपनी पोशाक बाबा संगत सिंघ जी को पहना अपनी कलगी बाबा संगत सिंघ जी के शीश पर सजा दी। बाबा संगत सिंघ जी की शक्ल-सूरत गुरु साहिब से मिलती थी। गुरु जी पांच सिंघों के हुक्म को स्वीकार कर गढ़ी में से निकल गए।

बाबा संगत सिंघ जी के पहनी हुई गुरु साहिब वाली पोशाक मुगलों को बार-बार भ्रम में डाल रही थी। बाबा संगत सिंघ जी की कमान तले सिंघों ने बहुत बहादुरी तथा दिलेरी से वैरियों का मुकाबला किया। बाबा संगत सिंघ जी ने गुरु साहिब द्वारा बख्शिश किये तीरों से दुश्मनों का नाश किया। बाबा जी जख्मी हुए भी अंत समय तक 'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' के जैकारे गजाते हुए शहादत प्राप्त करके सदा के लिए गुरु-चरणों में जा विराजे।



आरती-दर्शन

*-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

'आरती' संस्कृत के शब्द 'आरात्रिक' का अपभ्रंश रूप है, जिसका तात्पर्य है, रात्रि के बिना भी हो अर्थात् देवता की मूर्ति या किसी पूज्य हस्ती के आगे दीये घुमाकर पूजन करना।[१] एक अन्य मत के अनुसार, 'आरती' शब्द की उत्पत्ति संस्कृति के आर्त: (आ+ऋ+त) शब्द से हुई, जिसका भाव है--आतुर, दुखी, पीड़ित, बीमार, अप्रसन्न आदि।[२] दुखपूर्ण या अरजोई के सर्व में इष्टदेव से मंगल-कामना करना।[३] डॉ. जोध सिंघ लिखते हैं कि 'आरात्रिक' से उत्पन्न हुए 'आरती' शब्द का अर्थ है 'रोशनी' अथवा वह पात्र जिसमें रोशनी रखी जाती है और जिसको मूर्ति के आगे पूजा के लिये ऊपर को ले जाकर बाईं से दाईं ओर वृत्ताकार रूप में घुमाते हुए साथ-साथ मंत्रों का उच्चारण किया जाता है।[४]

'आरती' भक्ति का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथों में वर्णित 'नवधा भक्ति'[५] में से एक मानी गई है। इष्ट देव के समक्ष आरती कई प्रकार की मानी गई है, जैसे : दीये जलाकर, शंख-आरती, चमेली आदि के फूलों और पीपल के पत्तों से की जाने वाली आरती, अष्टांग डंडउत से की जाने वाली आरती।[६]

हिंदू मतानुसार थाल में दीये जलाकर चार बार मूर्ति के चरणों के आगे, दो बार नाभि के आगे, एक बार मुंह के आगे और सात बार सारे शरीर के आगे घुमाए जाते हैं।[७]

मध्ययुगीन सगुण भक्तों में आरती उतारने की धारणा आम प्रचलित थी। वैष्णव, शैव और साकत अपने-अपने इष्टदेव की आरती उतारते थे। निर्गुण उपासक भक्तों ने इस दिखावे की आरती को व्यर्थ समझकर प्रभु का नाम स्मरण करने को ही असल 'आरती' बताया है। 'आरती' करने की मनुष्य द्वारा बनाई हुई सीमित विधि सृष्टि के कर्त्ता निरंकार-प्रभु पर नियमित नहीं होती।

श्री गुरु नानक साहिब आसाम, कच्छार, पूर्वी बंगाल और बरमा की यात्रा करते हुए जगन्नाथपुरी में पहुंचे। वहां उन्होंने मंदिर के पुजारियों को मूर्तियों की आरती करते हुए देखा। उनकी आलोचना करते हुए गुरु जी ने संवत् १५६६ में प्रस्तुत आरती नामक छोटे आकार की बाणी की रचना की।[८] इसमें सर्वज्ञ और सर्वव्यापक परमात्मा की सहज आरती का विधान प्रस्तुत किया गया है। परमात्मा की विराट आरती का नियोजन करते हुए गुरु जी ने आरती को इस प्रकार गाना प्रारंभ किया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥रहाउ॥ . . .
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥

**रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो: ९९१४४१९४८४*

जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ (पन्ना ६६३)

भावार्थ--हे प्रभु! विराट आरती के निमित्त आकाश रूपी थाल में सूर्य एवं चंद्रमा दीपक बने हुए हैं और तारामंडल उस थाल में मोती के रूप में जड़े हैं। मलय पर्वत[९] को स्पर्श करके आने वाली सुगंधित वायु आरती की धूप है। वायु चंवर कर रही है। हे ज्योतिस्वरूप प्रभु! वनों में खिली समस्त वनस्पति और समस्त पुष्प आरती के लिये पुष्प बने हुए हैं। तुम्हारी आरती सीमित कैसे हो सकती है? भवखंडन, अनाहद शबद, एक रस ध्वनि जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड एवं घट-घट में निरंतर बज रही है, मानो आरती में नगाड़े का कार्य कर रही है। हे प्रभु! जो तुम्हें अच्छा लगता है वही वास्तविक आरती है।

इस शबद में श्री गुरु नानक साहिब आरती के उस स्वरूप का वर्णन करते हैं जिसमें निरंकार का पैदा किया हुआ असीम सगुण पसारा उसके अपने हुक्म में निरंतर आरती कर रहा है। यह उसके अपने पसारे अनंत खंडों-ब्रह्मंडों द्वारा की जा रही आरती है। इस आरती की सामग्री और इसका होना उस निरंकार की अपनी क्रिया है, किसी और की नहीं। निरंकार का सारा सगुण पासारा उसके हुक्म में अनंत बहुपासारी आरती निरंतर कर रहा है।[१०]

डॉ. जयराम मिश्र लिखते हैं, "शब्द का गान समाप्त हुआ। गुरु महाराज की आंखें विस्माद-भाव में ऊपर उठ गईं। राजा-महाराजा, पुजारी एवं श्रोतागण स्तब्ध खड़े थे। उस समय उन सबको प्रभु की अद्‌भुत विभूतियों का भान हो रहा था। प्रभु की लीला पर सभी विमुग्ध थे। उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति हो रही थी कि उस विलक्षण कारीगर ने आकाश, सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्रगण, पृथ्वी, वायु, ज्योति आदि का निर्माण किया है। उसी की आज्ञा से सब मर्यादा में स्थित हैं और अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। सभी जड़-चेतन के अंतर्गत उसी जगत-प्रकाशक का प्रकाश भासित हो रहा है। ऐसे प्रभु की शक्ति और महिमा को भूलकर लोगों ने मूर्तियों को ही सब कुछ समझ रखा है। गुरु महाराज के शबद ने उन लोगों को दिव्य-दृष्टि प्रदान कर दी।[११] गुरु-महाराज ने उन्हें बतलाया कि आप लोग प्रेम और श्रद्धा से परमात्मा द्वारा निर्मित प्राणियों की सेवा कीजिए, सर्वनिर्माता परमात्मा का सदैव चिंतन कीजिए। मनसा, वाचा, कर्मणा से उस परम पिता की आराधना करना मनुष्य-जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। सभी प्राणियों के भीतर ज्योतिस्वरूप परमात्मा की प्रचंड ज्योति प्रकाशित है। माया, मोह, लिप्सा के कारण यह ज्योति दबी रहती है। गुरु-कृपा से यह ज्योति प्रकट होती है।

श्री गुरु नानक साहिब का धनासरी राग में शबद *'गगन मै थालु'* कुछ लगमात्र के अंतर से पृष्ठ १३ पर भी दर्ज है। इसके अतिरिक्त श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आरती के चार अन्य शबद-भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सैण जी तथा भक्त धंना जी के दर्ज हैं। इनमें से भक्त धंना जी ने अपने शबद में 'आरता' शब्द का प्रयोग किया है। भाई वीर सिंघ के अनुसार, भक्त धंना जी ने लाड़ (प्यार) में आकर 'आरती' के समान अपने वाहिगुरु के लिए 'आरता' शब्द का प्रयोग किया है।[१२] भाई साहिब सिंघ लिखते हैं कि 'आरता' शब्द 'आरती' शब्द से मिलता-जुलता है, इसलिये इस शबद को भी आरती वाले शबदों के साथ धनासरी राग में दर्ज किया गया है। वैसे आरती के बारे में इसमें कोई जिक्र नहीं है।[१३]

'आरता' का कोशगत भाव है--दुखिया, पीड़ित, भिखारी आदि। इस शबद में भक्त जी कहते हैं, "हे पालनहार प्रभु! मैं तेरे दर का भिखारी हूं। जो सेवक तेरी भक्ति करते हैं उनके कारज तू खुद ही संवारता है। पूरे शबद से ज्ञात होता है कि भक्त जी प्रभु से रोजाना जीवन की जरूरतों की मांग कर रहे हैं :

गोपाल तेरा आरता ॥ . . .
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥रहाउ॥ . . .
गऊ भेस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जन धंना लेवै मंगी ॥ (पन्ना ६९५)

भक्त रविदास जी ने परम तत्व को नाम-स्वरूप कहा है। उन्होंने अपनी 'आरती' में 'ब्रह्म' नाम की प्रशंसा की है। ब्रह्म (प्रभु) का नाम ही केवल सत्य है, उसके बिना सब कुछ मिथ्या है। वही नाम सर्वत्र संसार में व्यापक है। उसी नाम-स्वरूप निर्गुण ब्रह्म के प्रकाश से समस्त वस्तुएं प्रकाशित हैं। उसी का प्रकाश समस्त जगत में फैला हुआ है। उसी के नाम की उपासना सर्वश्रेष्ठ आरती है।[१४] उनकी आरती की कुछेक पंक्तियां अवलोकनीय हैं :

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥२॥रहाउ॥ . .
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ . . .
कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥ (पन्ना ६९४)

भक्त सैण जी कहते हैं कि हे प्रभु! तेरी पैदा की हुई असीम कुदरत को देखकर तेरे ऊपर बलिहार जाना ही मेरी वास्तविक आरती है, क्योंकि धूप, दीप, घी आदि सामग्री के साथ की जाने वाली परंपरागत आरती से तेरे विराट स्वरूप की आरती कर पाना संभव नहीं। मेरे लिये तू ही आरती में प्रयोग किए जाने वाले सुंदर दीये और निर्मल बाती की भांति है। मैं तेरी आरती के लिए तुझसे अधिक निर्मल दीये और बाती कहां से लाऊं?

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥
मंगला हरि मंगला ॥
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥रहाउ॥
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥
तूंही निरंजनु कमला पाती ॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैन भणै भजु परमानंदे ॥ (पन्ना ६९५)

प्रभु की पूजा में आरती का महत्व भक्त कबीर जी ने भी माना है। उनकी आरती की व्याख्या विलक्षण है। उन्होंने अपना तन, मन और शीश अर्थात् व्यक्त-भाव में सीमित अपने सारे कर्म, सारी इच्छाएं और सारे विचार भगवान को समर्पित कर उनसे अभिन्न होने का प्रण लिया। प्रण के फलस्वरूप आत्मलीन होने पर प्रभु-ज्योति प्रकट हो गई, मानो उनकी पूजा की सारी मानवी सामग्री सार्थक हो गई। उन्होंने उस आध्यात्मिक उत्कर्ष की स्थिति में दिव्य आरती और शंख-ध्वनि तथा घंटावाद का श्रवण भी किया जो भौतिक नहीं थे। ज्ञान का दीपक, अनाहद नाद, प्रभु-ज्योति उस परमात्म-दर्शन की शुभ घड़ी को यशस्वी बना रहे थे। आरती है परमात्म-दर्शन के लिए, जब प्रकाशों के प्रकाश परमात्मा का दर्शन हो गया और सारी पूजा-अर्चना का उपसंहार भी। अब बाहरी पूजा का संकल्प छूट गया होने के

कारण वे विराट ब्रह्म की विराट आरती का अनुभव इस प्रकार करने लगे[१५] :

सुंन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥
सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥
लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥
ठाडा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥रहाउ॥
ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥
जोति जाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥२॥
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥ *(पन्ना १३५०)*

उपरोक्त विचार-चर्चा और गुरबाणी की रोशनी में यही प्रतीत होता है कि करोड़ों खंडों-ब्रह्मंडों के मालिक प्रभु का नाम ही उसकी असल पूजा और आरती है :

--प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ *(पन्ना १३०८)*
--पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ *(पन्ना ४८९)*

प्रभु के नाम के अतिरिक्त शेष कर्म दिखावे से प्रेरित हैं। सिक्ख धर्म में निरंकार की हो रही आरती को निरूपित करते हुए "गगन मै थालु" शबद का उच्चारण किया जाता है। इस शबद के उच्चारण करने से एक अनंत निरंकार चेतन प्रभु और उसके हुक्म द्वारा पैदा किया हुआ सारा सगुण पसारा मानव सुरति में प्रकट हो जाता है। मानव सुरति निरंकार की आरती करते अनंत खंडों-ब्रह्मंडों की ओर बहुत लंबी उड़ान भरने लगती है, ब्रह्म-चेतना विगस जाती है, सब में उसी की ज्योति प्रगासी प्रतीत होती है।

हवाले और टिप्पणियां :

१. भाई काह्न सिंघ नाभा, गुरशबद रतनाकर महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब १९९९, पृष्ठ १०४

२. हरिभजन सिंघ (डॉ.), (संपा.), निरुकत श्री गुरु ग्रंथ साहिब, भाग तीसरा, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००३, पृष्ठ १०१

३. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्व कोश, गुर रतन पब्लिकेशन, पटियाला, २००५, पृष्ठ १२१

४. जोध सिंघ, सिख पंथ विशव कोश, प्रथम भाग, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००८, पृष्ठ २२०

५. श्रवण, कीर्तन, सिमरन, पादसेवन, अचर्न (आरती), वंदन, संख्य, दास्य, आतम निवेदन, (महान कोश, पृष्ठ ६८६)

६. कोहली सुरिंदर सिंघ, पंजाबी साहित कोश, प्रथम भाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २०००, पृष्ठ २५६

७. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विशव कोश, प्रथम भाग, गुर रतन पब्लिकेशन, पटियाला, २००५, पृष्ठ १२१

८. महान कोश, पृष्ठ ५००

९. एक पर्वत जो दक्षिण भारत में मद्रास के जंगम जिले में है और चंदन के लिये प्रसिद्ध है। (महान कोश, पृष्ठ ९५६)

१०. डॉ. विकरम सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब : एक ओअंकार दर्शन, पृष्ठ १३

११. पदम गुरचरन सिंघ, (डॉ.), युग-प्रवर्तक गुरू नानक और उनकी बाणी; नव चिंतन प्रकाशन, श्री अमृतसर, १९९०, पृष्ठ ६२

१२. भाई वीर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब कोश, सिंघ ब्रॉदर्स, १९९५, पृष्ठ ३८

१३. भाई साहिब सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण, पृष्ठ १८८-८९

१४. पदम (डॉ.), संत रविदास : विचारक और कवि, नव चिंतन प्रकाशन, जलंधर, १९७७, पृष्ठ ११०

१५. उर्वशी सूरती, कबीर जीवन और दर्शन, लोक भारती, १५, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, २००४, पृष्ठ १००.



गुरसिक्खी बारीक है-९

-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

सतिगुरु सभी को अपनी शरण में लेता है, सभी पर अपनी कृपा की वर्षा करता है। उसकी शरण में जाकर कृपा का पात्र कोई भी बन सकता है। एक सच्चा सिक्ख उसे अंगीकार करने की अभिलाषा से सतिगुरु की शरण में जाता है। वह गुरमुख है और सतिगुरु की ओर ही देख रहा है। गुरमुख का ध्यान सतिगुरु के चरणों में ही केंद्रित और स्थित है, किसी और से उसे कोई आशा नहीं है, न ही संबंध है। यदि कोई पूरी श्रद्धा से सतिगुरु का ध्यान तो धर रहा है मगर अन्यत्र भी अपनी आस्था को टिकाये हुए है, नाना प्रकार के अन्य उपाय भी कर रहा है तो ऐसा व्यक्ति गुरमुख नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्ति के मन में गुरु को अंगीकार करने की भावना दृढ़ नहीं हो सकती। भाई गुरदास जी ने श्रद्धा और समर्पण के अंतर को परिभाषित किया है। समर्पण एक से अधिक के प्रति नहीं हो सकता।

सतिगुर सरणी जाइ सीसु निवाइआ।
गुर चरणी चितु लाइ मथा लाइआ।
गुरमति रिदै वसाइ आपु गवाइआ।
गुरमुखि सहजि सुभाइ भाणा भाइआ।
(भाई गुरदास जी, वार ३:२०)

भाई गुरदास जी की उपरोक्त वार की एक-एक पंक्ति सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण है। एक गुरमुख के लक्षण गिनाते हुए वे कहते हैं कि गुरमुख सतिगुरु की शरण में जाकर अपना शीश निवा दे। शीश किसी भी मनुष्य के शरीर का सर्वोच्च अंग होता है और इसी में मस्तिष्क स्थित होता है जो समस्त शारीरिक अंगों की गतिविधियों को संचालित करता है। शीश झुकाना एक शारीरिक प्रक्रिया है किंतु सिक्ख धर्म-दर्शन इसे संपूर्ण समर्पण के संदर्भ में लेता है। जब मनुष्य अपने शरीर पर अपने नियंत्रण का त्याग करके उसका निर्णय सतिगुरु पर, परमात्मा पर छोड़ देता है तो उसे प्रमाणिक रूप से शीश झुकाना माना गया है। सतिगुरु की शरण में एक गुरमुख इसलिये जाता है क्योंकि वह उसे सर्वश्रेष्ठ, पालनहार और अनन्य मानता है। गुरमुख की नज़र में उससे अधिक समर्थ कोई अन्य तो क्या, उसके समान भी समर्थ कोई नहीं है।

उसके समान दयालु कोई नहीं है। वह गुणों का अपार भंडार है और वही अंततः सहायक है। उस महान सतिगुरु या परमात्मा की शरण में जाने और उसके प्रति समर्पित हो जाने के कितने ही कारण हैं। एक गुरमुख के लिये आवश्यक है कि वह इन कारणों को जान ले और विश्वास कर ले। सतिगुरु की सामर्थ्य अपार है और वो पूरे संसार को सहारा दे रहा है:

गुरु परमेसरु करणैहारु ॥
सगल स्रिसटि कउ दे आधारु ॥१॥
गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥
दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥१॥रहाउ॥
भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥२॥ (पन्ना ७४१)

मनुष्य जब सतिगुरु की शरण में जाकर

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

अपना सर्वस्व उसे समर्पित कर देता है तो उसकी सारी व्याधियां, सारे अभाव ही नहीं मिट जाते बल्कि जन्मों-जन्मों के कमाये उसके पाप भी धुल जाते हैं और सतिगुरु उसे माया के जाल से बचा लेता है। सतिगुरु की कृपा उसे मन में और मन से धारण करने से ही प्राप्त होती है।

गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥
सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥
(पन्ना ५२)

सतिगुरु से मन का संबंध होने पर ही वह जीवन का आधार बनता है। उसकी महिमा का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता।

गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥
गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥२॥
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥
गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥३॥
(पन्ना ५२)

एक गुरमुख इस बात पर पूर्ण विश्वास करता है कि सतिगुरु की इच्छा व आदेश से ही सब कुछ हो रहा है और उसके समान सामर्थ्य वाला कोई और नहीं है। कुछ भी ऐसा नहीं है जो गुरु की सामर्थ्य से बाहर है। सतिगुरु सभी कामनाएं पूर्ण करने वाला तीर्थ-स्नान और पौराणिक मान्यताओं के पारिजात वृक्ष जैसा है। सतिगुरु के दर्शन पाकर एक गुरमुख स्वयं को बड़ा भाग्यवान समझता है। यह अपने मन को टटोलने की बात है कि जब एक सिक्ख गुरु के घर जाता है तो क्या ऐसा विश्वास और भावना उसके मन में प्रबल होती है?

जब मन में सतिगुरु के प्रति विश्वास होगा तभी तो हम उसका आधार प्राप्त करने के पात्र बनेंगे। विश्वास ऐसा हो कि सब कुछ उससे ही पाने की आशा हो :

तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥
तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥१॥
तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥
चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥१॥रहाउ॥
बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥
तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥२॥
कोटि दास जा कै दरबारे ॥
निमख निमख वसै तिन्ह नाले ॥३॥
हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥
ओति पोति नानक संगि बसेरा ॥४॥ (पन्ना ७३९)

गुरमुख सतिगुरु को जब मन में धारण करके उसके साथ जुड़ता है और उसके अपार गुणों से अभिभूत होकर उसे अपने जीवन का आधार बना लेता है तो यह विश्वास उसके मन में सतिगुरु के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है। प्रेम की भावना उसके मन के भटकाव को रोक देती है और उसे सतिगुरु की अधीनता में सुख का अनुभव होने लगता है। प्रेम ही उसके सतिगुरु-परमात्मा के साथ संबंध को निरंतर मजबूत करता रहता है और परमात्मा को पल भर भी विस्मृत नहीं होने देता। गुरमुख प्रेम में ही स्वयं को भूल जाता है और हर समय, चारों ओर उसे परमात्मा ही परमात्मा दिखता है। सच यह है कि प्रेम के बिना न पूर्ण समर्पण हो सकता है और न ही संपूर्ण भक्ति संभव है। प्रेम के रस में विभोर होकर एक गुरमुख भंवरे की तरह परमात्मा के चरणों का प्रेमी बन जाता है :

चरण कवल पतीआइ भवरु लुभाइआ।
सुख संपट परचाइ अपिओ पीआइआ।
(भाई गुरदास जी, वार ३:२०)

प्रेम में गुरमुख सांसारिक सुखों से ऊपर उठ जाता है और उसे सतिगुरु के वचनों में अमृत का सुख मिलने लगता है। प्रेमामयी भक्ति गुरमुख के जीवन में नित्य नये परिवर्तन लाती रहती है और हर दिन उसका मन अधिक सरस होता जाता है :

नित नित नवल नवेल गुरमुखि भेसिआ।

(भाई गुरदास जी, वार ३:९)

प्रेम चित्त को ठहराव देता है और गुरमुख की तार्किक बुद्धि को शांत कर देता है। सतिगुरु से प्रेम के संबंध में अपनी बुद्धिमता का कोई काम ही नहीं है। अपनी युक्तियां निरर्थक हो जाती हैं। गुरमुख यदि मन में सतिगुरु के प्रति प्रेम-भक्ति को पोषित कर रहा है और अपनी चतुरता को भी आगे ला रहा है तो इसका सीधा अर्थ है कि वह संपूर्ण समर्पण की अवस्था को नहीं पा सका है। परमात्मा से भी याचना करना, अपने कौशल पर भी गर्व करना दोनों स्थितियां साथ-साथ नहीं चल सकतीं। ऐसा दो कारणों से होता है। एक तो सतिगुरु की सामर्थ्य का पूर्ण ज्ञान और पूर्ण विश्वास नहीं होता और दूसरा, हम उसके न्याय पर आश्रित न रहकर अपने भाग्य का निर्णय स्वयं करना चाहते हैं। इसका अर्थ है कि हमने सतिगुरु के चरणों में अपना शीश झुकाया ही नहीं और उसके साथ मन का संबंध स्थापित करने के पहले कदम से ही हम चूक गये हैं। अपनी चतुरता से नहीं परमात्मा के अनुसार चलने में ही हित है :

जब इहु मन महि करत गुमाना ॥
तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥
जब इहु हूआ सगल की रीना ॥
ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥१॥ . . .
जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥
तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥
जब इनि करणैहारु पछाता ॥
तब इस नो नाही किछु ताता ॥३॥ . . .
जब इनि किछु करि माने भेदा ॥
तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥
जब इनि एको एकी बूझिआ ॥
तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥३॥

(पन्ना २३५)

गुरमुख को अपने मान में भटकते रहने से भला है कि सबके चरणों की धूल बन जाये ताकि परमात्मा से जुड़ सके। मेरा-मेरा करते हुए संकटों का सामना करने से भला है कि उसकी शरण में जाना, जो संसार में सारी घटनाओं का कारक है और कठिनाइयों से उबारने वाला है। मन में आशंका और दुविधा धारण करने पर दुख सहना पड़ता है और पश्चाताप होता है। जब बिना किसी द्वंद के गुरमुख सतिगुरु का आधार लेता है तो उसके जीवन का मनोरथ सिद्ध हो जाता है।

एक गुरमुख अपने 'स्व' को सतिगुरु में समाहित कर देता है और परमात्मा के प्रेम-रंग में रंग कर सहज अवस्था को पा लेता है, जिसमें उसकी सारी इच्छाएं समाप्त होकर शून्य हो जाती हैं और वह परमात्मा की इच्छाओं को ही अपनी इच्छाएं बना लेता है। सहज अवस्था एक तरह से शुद्ध मन की अवस्था है। इस अवस्था में प्रेम का रंग गहरा चढ़ता है और उससे मिलन की प्यास बढ़ती ही जाती है। परमात्मा सुखों का सागर बन जाता है :

सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥
अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥
अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥१॥

(पन्ना २९)

गुरमुख जब परमात्मा के प्रेम में डूबने

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

गुरबाणी चिंतनधारा : ५४

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥
हरि का नामु जपत निसतरै ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥
(पन्ना २६४)

दूसरी असटपदी के इस पद में श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि ईश्वर के नाम के बिना समस्त प्राप्तियां, यहां तक कि सारी सृष्टि का राज्य प्राप्त करने वाला राजा भी दुखी ही रहता है। कारण, वह प्रभु-नाम के बिना राज्य अभिमान में ग्रसित हो जाता है। परमेश्वर के नाम-सिमरन द्वारा ही वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है, प्रभु नाम में सारे सुख समाहित हैं। मनुष्य लाखों-करोड़ों कमा कर भी तृष्णालु ही रहता है अर्थात् जितना अधिक माया का संग्रह करता जाता है, उतनी ही उसकी इच्छाएं बढ़ती जाती हैं और जितनी इच्छाएं बढ़ती जाती हैं उतने ही बंधनों का शिकंजा कसता जाता है अर्थात् संतोष रूपी गुण इसके पास न होने के कारण निरंतर इसकी तृष्णाएं बढ़ती ही जाती हैं, उसे प्रभु-नाम के बिना कोई रोक नहीं सकता। माया रूपी भवसागर से हरि का नाम जप कर ही पार उतारा हो सकता है। सिमरन की बरकतों से ही संतोष रूपी धन की प्राप्ति होती है, जिसके फलस्वरूप संसार समुद्र से पार उतरा जा सकता है।

"जिह मारगि इहु जात इकेला ॥" इस पंक्ति का आशय है कि जिस (यमराज के) मार्ग पर अर्थात् मृत्यु के उपरांत जब मनुष्य को अकेले ही जाना होता है वहां केवल प्रभु का नाम ही इसके साथ होता है। प्रो. साहिब सिंघ ने इस पंक्ति का अर्थ इस जीवन रूपी मार्ग की ओर संकेत करते हुए बहुत सुंदर स्पष्ट करके दिया है कि जिन रास्तों से यह जीव अकेला जाता है (भाव जिंदगी रूपी झमेलों में यह चिंतातुर रहता है और इसकी कोई सहायता नहीं कर सकता) वहां परमेश्वर का नाम इसके साथ सुख देने वाला होता है। अतः हे मेरे मन! ऐसा सुख-प्रदाता नाम सदैव जपना चाहिए। हे नानक! ऐसे (पावन नाम) को गुरु के उपदेश से जप कर ऊंचा दर्जा अर्थात् परम गति प्राप्त होती है।

वस्तुतः प्रभु का नाम ही भवजल से पार उतारने में सहायी होकर जीवों का उद्धार करता है। समस्त सांसारिक प्राप्तियां नाशवान हैं। गुरबाणी में अन्यत्र भी वास्तविक धन का संग्रह करने हेतु उपदेश है, यथा :

संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥
तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥
(पन्ना ४९)

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

अर्थात् जीव की सुखद यात्रा हेतु कुछ ऐसा धन ले चलो जो लोक-परलोक दोनों में सहायक हो।

छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हुए जीव को उपदेश देते हैं कि दुनियावी आसरे चाहे कितने भी हों उनसे उस मार्ग पर चलते हुए कोई सहायता नहीं मिल सकती।

जहां लाखों-करोड़ों बाहों (भुजाओं) के होते हुए जीव दैन्य अवस्था से छुटकारा नहीं पा सकता अर्थात् दुनिया में लाखों भाई-बंधुओं के होते हुए भी अपने कर्मों के कारण प्राप्त दीनता, दरिद्रता, दुखों, क्लेशों से मुक्ति संभव नहीं वहां हरि-सिमरन से इन मुश्किलों से बच कर भवसागर से पार उतरा जा सकता है। जहां करोड़ों मुसीबतें जीवन का हनन करने वाली हो जाएं वहां परमेश्वर का (पावन) नाम जीव का पल भर में उद्धार कर सकता है अर्थात् जीव को समस्त संकटों से बचा लेता है। आवागमन में फंसा हुआ प्राणी बार-बार जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। यह जन्म-मरण का सिलसिला प्रभु-नाम द्वारा ही खत्म होता है तथा जीव विश्राम पा लेता है। अहंकार से ग्रसित मलिन हुआ यह मन, जिसे जीव कभी धोने का प्रयत्न ही नहीं करता अर्थात् अपना अहंकार त्यागना ही नहीं चाहता, केवल प्रभु-सिमरन द्वारा धोया जा सकता है अर्थात् प्रभु-नाम करोड़ों पापों का नाश करने में समर्थ है। अंत में गुरदेव मन को प्रबोधित करते हुए पावन फरमान करते हैं कि हे मन! परमेश्वर का ऐसा पावन नाम हृदय की गहराइयों से प्रेम एवं लगन से, आदर-भाव से जप। प्रभु का यह प्यारा नाम गुरमुखों की संगत में ही नसीब होता है।

जीवन का उद्धार प्रभु-नाम से ही संभव है। कोटिश विकारों में ग्रसित जीव हेतु प्रभु का सिमरन तत्काल सुख-फलदायी है तथा आवागमन से मुक्त करने वाला है। इतिहास में कितने ही उदाहरण हैं जहां अनेकों विघ्नों में प्रभु-सिमरन द्वारा जीव का तत्क्षण उद्धार हुआ है, जैसे कि समय के बादशाह (सिकंदर लोधी) ने भक्त कबीर जी को मारने हेतु अनेक यत्न किए लेकिन वे प्रभु-नाम के सहारे हर बार बच गए। भक्त कबीर जी ने स्वयं बाणी में स्पष्ट किया है कि किस प्रकार प्रभु का नाम जल-थल सर्वत्र रक्षक है :

कहि कबीर कोऊ संग न साथ ॥
जल थल राखन है रघुनाथ ॥ (पन्ना ११६२)

यही नहीं, भक्त प्रहलाद, जिसे स्वयं के पिता हिरण्यकश्प द्वारा प्रताड़ित किया गया, को मारने के कई प्रयास किये गए लेकिन प्रभु-सिमरन की बरकतों से परमेश्वर ने अपने भक्त की रक्षा की है, बशर्ते, उस अकाल पुरख का नाम पूर्ण श्रद्धा से जपा जाए जैसे कि भक्त कबीर जी का फरमान है :

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ (पन्ना ३३७)
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥

जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
जहां पंथि तेरा को न सिञानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥
तह नानक हरि हरि अंम्रित बरखै ॥४॥

दूसरी असटपदी के चौथे पद में पंचम पातशाह इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने की कठिन साधना और विषम मार्ग की ओर संकेत करते हुए अंततः ईश्वर नाम रूपी राहदारी का संग्रह करने हेतु प्रेरित करते हुए कलयुगी जीवों का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। श्री गुरु अरजन देव जी मानव को संबोधित करते हुए फरमान करते हैं कि जिस जिंदगी रूपी मार्ग के मील गिने नहीं जा सकते अर्थात् मृत्यु उपरांत जिस मार्ग से जीव को गुजरना पड़ता है उसकी लंबाई अवर्णनीय है, वह रास्ता बहुत लंबा है। उस रास्ते को तय करने में प्रभु का नाम ही सहायक हो सकता है। इस संसार में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने हेतु चाहे हम जिस भी साधन से जाएं उसके लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। उस मार्ग में यहां की दौलत काम नहीं आती वहां तो केवल ईश्वर-नाम की पूंजी ही गंतव्य स्थान तक पहुंचाने में मददगार सिद्ध होती है। यही नहीं, जिस मार्ग में घोर अंधकार है वहां ईश्वर का नाम ही तेरे लिए रोशनी है अर्थात् विकारों से परिपूर्ण विषम अंधकारमयी मार्ग में प्रभु-नाम ही तेरे साथ दीपक सदृश्य उजियारा कर तेरा मार्गदर्शक बनेगा। जिस मार्ग में तेरा (दुनियावी) कोई भी साथी, मित्र व बंधु साथ नहीं निभाएगा वहां ईश्वर का नाम ही तेरा सच्चा एवं घनिष्ठ मित्र साबित होगा। (यही नहीं) जिस मार्ग में विकारों की अत्यधिक असहनीय तपिश होगी वहां प्रभु-नाम की ही तेरे ऊपर घनी एवं शीतल छाया होगी। कलयुगी जीवों के मन को प्रबोधित करते हुए पंचम पातशाह पावन मार्गदर्शन करते हैं कि जहां माया की तीव्र प्यास तुझे सताएगी वहां प्रभु-नाम तुझ पर अमृत की वर्षा करके तेरी विकारों की प्यास को शांत कर देगा।

वस्तुतः इस जीवन रूपी सफर में जीव को जिस लंबे, भयावह तथा कष्टदायक मार्ग से गुजरते हुए अथाह कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उन सबसे बचने का एक मात्र उपाय प्रभु-सिमरन ही है जो कि इसकी लोक-परलोक सर्वत्र सहायता करता हुआ सच्चा हितैषी सिद्ध होता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

--दूख दरदु भरमु भउ नसिआ ॥
करनहार नानक मनि बसिआ ॥ (पन्ना १८९)
--भगत जना की बरतनि नामु ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
हरि का नामु दास की ओट ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥

प्रस्तुत पद में पंचम पातशाह भक्त की वास्तविक पूंजी एवं जीवन-युक्ति का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि परमेश्वर के भक्तों का रहन-सहन, उनका व्यवहार, कार्य शैली प्रभु का नाम ही होता है तथा भक्तों के हृदय में प्रभु-नाम सदैव स्थिर रहता है। डॉ.

जोध सिंघ ने इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है--"भक्त-जनों का कार्य-व्यवहार केवल प्रभु-नाम ही है। प्रभु-नाम भक्तों का आश्रय है। प्रभु-नाम से करोड़ों हरि-भक्तों का उद्धार हुआ है अर्थात् हरि-नाम से जीव करोड़ों विकारों से मुक्त हो जाता है। भक्त-जन दिन-रात (निरंतर) ईश्वर की उपमा (यशोगान) करते हैं। साधु-संत दिन-रात हरि-यश करते हुए प्रभु-नाम की औषधि का संग्रह करते हैं और यही औषधि उन्हें समस्त विकारों से मुक्त रखती है। परमेश्वर का नाम ही भक्त-जनों हेतु वास्तविक खजाना है। उस अकाल पुरख ने स्वयं अपने भक्त-जनों को नाम रूपी खजाना भेंट किया है अर्थात् दान स्वरूप प्रदान किया है। उनका मन तथा शरीर एक अकाल पुरख वाहिगुरु के रंग में पूर्णतया रंग गया है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि ऐसे हृदय वाले जीवों की चित्त वृत्ति ज्ञान स्वरूप हो जाती है।

ऐसे गुरमुख प्यारे, जिनका रोम-रोम उस परमेश्वर के नाम-रंग में रंग जाता है, उन्हें किसी और आसरे की आवश्यकता नहीं रह जाती। श्री गुरु रामदास जी ने दुनियावी जीवों एवं अपने मन की अवस्था को बयान करते हुए कहा है कि लोगों को तो दुनिया में अपने भाइयों-बंधुओं, मित्रों तथा धन-दौलत का सहारा होता है लेकिन मुझे तो केवल प्रभु-परमेश्वर का ही आसरा है, यथा :

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ . . .
हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ (पन्ना ३६६)

अकाल पुरख सर्वशक्तिमान है। उसका आश्रय लेने वाले जीव के लिए संसार में किसी की मोहताजी नहीं रह जाती। ऐसे ही नीर-क्षीर विवेकी मनुष्य सदैव उसके रंग में रंगे हुए आनंद-मग्न रहते हैं।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥

उपरोक्त पद में गुरु पातशाह प्रभु-नाम की महत्ता दर्शाते हुए स्पष्ट करते हैं कि प्रभु का नाम ही जीव के लिए जीते-जी मुक्ति की युक्ति समझाने का सहज मार्ग है।

हरि का नाम हरि के भक्तों के लिए मुक्ति का वास्तविक साधन है, जीवन जीने की युक्ति (कला) है। प्रो. साहिब सिंघ के चिंतनानुसार, भक्त के लिए प्रभु का नाम ही (माया के बंधनों से) छुटकारे का ढंग है। प्रभु का नाम ही भक्त-जनों की आत्मिक खुराक है। प्रभु का नाम ही भक्त का असली रूप-रंग है अर्थात् प्रभु का नाम ही भक्त हेतु प्राकृतिक सौंदर्य है। हरि-बंदगी (प्रभु-अराधना) से समस्त विघ्नों का (समूल) नाश हो जाता है। हरि का नाम ही हरि-भक्तों की असली बढ़ाई, वास्तविक शोभा है। हरि-नाम की बरकतों से भक्त ख्याति प्राप्त करते हैं। प्रभु-सेवकों हेतु योग तथा भोग (त्यागी का त्याग तथा गृहस्थी द्वारा गृहस्थ में रहते हुए माया का भोग) सब कुछ प्रभु-सिमरन में ही समाहित है। प्रभु-सिमरन में लीन जीव को किसी तरह का दुख (वियोग की पीड़ा) को सहन नहीं करना पड़ता। प्रभु का भक्त सदैव प्रभु-

सेवा अर्थात् सिमरन में ही मग्न रहता है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि हरि का भक्त निरंतर प्रभु की आराधना ही करता रहता है।

वस्तुत: परमेश्वर के भक्त हेतु गृहस्थी का आधार (जीवन-मुक्ति) तथा जीवन-मुक्ति का साधन भी केवल परमेश्वर का नाम ही है। बाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं:

मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥
प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥ (पन्ना २००)

मुक्ति, जीवन की मुक्ति एवं योग की विभूति है। विकारों से मुक्ति प्रभु-नाम से ही संभव है, नाम ही आत्मिक जीवन की खुराक है तथा जीवन जीने की सही शैली है। अत: प्रेम एवं श्रद्धा-भाव से हरि-नाम का सिमरन करते हुए उस परमेश्वर के गुणगान में मग्न रहना चाहिये।

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥

गुरु पातशाह दूसरी असटपदी के इस पद में प्रभु-नाम को सर्वोत्तम धन बताते हुए भक्त और प्रभु-नाम के गहरे संबंध का भावपूर्ण वर्णन करते हुए पावन फरमान करते हैं कि प्रभु के सेवक हेतु प्रभु का नाम ही धन-माल का खजाना है। भक्त के लिए वास्तविक दौलत का भंडार प्रभु का नाम ही है। परमेश्वर अपने भक्तों को नाम-रूपी धन-माल स्वयं ही बख्शता है। हरि-भक्तों का प्रबल आसरा (जिसे कोई परास्त नहीं कर सकता) प्रभु-नाम ही है। प्रभु-कृपा से ही ईश्वर के भक्त प्रभु-नाम के अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं ढूंढते। प्रभु के भक्त पूरी तरह से प्रभु-नाम के रंग में रंगे रहते हैं अर्थात् प्रभु का सेवक प्रभु के नाम-रस में ओत-प्रोत रहता है और शून्य समाधि में लीन होकर नाम-रस में मग्न रहता है। भक्त-जन आठों पहर प्रभु-नाम की आराधना में लगा रहता है। प्रभु-नाम के रंग में रंगा हुआ ऐसा भक्त दुनिया में कहीं छिपा नहीं रहता, वह सर्वत्र विख्यात हो जाता है। प्रभु की भक्ति बेअंत जीवों को विकारों से मुक्ति दिलवाती है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि भक्तों की संगत में और भी अनेकों का उद्धार हो जाता है।

प्रभु के सच्चे भक्तों को सच्चा सुख केवल प्रभु-सिमरन से ही प्राप्त होता है। प्रभु-सिमरन द्वारा भवसागर से पार उतरने वाले अनेकों परोपकार कर उनको भी भवसागर से पार उतरवा देने में सक्षम हो जाते हैं, जैसा कि जपु जी साहिब के अंतिम सलोक में स्पष्ट किया है:

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
नामु तुलि कछु अवरु न होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

दूसरी असटपदी के अंतिम पद में पंचम पातशाह प्रभु-नाम को पारिजात वृक्ष एवं कामधेनु गाय आदि सर्व इच्छा पूरक संज्ञाओं से उपमित करते हुए पावन फरमान करते हैं कि यह परमेश्वर का नाम पारिजात (समस्त सुख फलदायक वृक्ष) है। हरि का गुणगान कामधेनु है। हरि के गुणों की चर्चा करना सर्वोत्तम अर्थात् सबसे श्रेष्ठ कार्य है। हरि-नाम के श्रवण से तन की पीड़ा तथा मन के संताप मिट जाते हैं। नाम की महिमा संतों के हृदय में बसती है। संत-प्रताप से ही सम्पूर्ण पाप-कलेश नाश हो जाते हैं। संतों की संगत बड़े भाग्य से मिलती है। भाग्यशाली मनुष्य को ही संत-जनों की संगत नसीब होती है। साधु-संतों की सेवा की बरकतों से ही हरि-सिमरन मुमकिन है। संतों के आशीर्वाद से प्रभु-सिमरन किया जा सकता है। प्रभु-नाम के तुल्य और कुछ भी नहीं है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि कोई विरला ही गुरमुख होकर नाम-धन की प्राप्ति करता है। प्रभु-नाम गुरु की कृपा द्वारा किसी भाग्यशाली को ही नसीब होता है।

लोक-परलोक के समस्त सुख प्रभु-नाम में ही समाहित हैं। अकाल पुरख की रहमत से पूर्ण गुरु की प्राप्ति और पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि से ही प्रभु-नाम की प्राप्ति संभव हो सकती है :

चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥
नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥ (पन्ना ७१७)

प्रभु-सिमरन की बरकतों से 'नाम' तथा 'नामी' अभेद हो जाते हैं। संपूर्ण असटपदी में नाम-सिमरन की बरकतों की विस्तारपूर्वक एवं भावपूर्ण सुंदर अभिव्यंजना है। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ (पन्ना ३९७)



गुरसिक्खी बारीक है-९

(पृष्ठ ३९ का शेष)

लगता है और उसकी चाहत को अपनी चाहत (सहज अवस्था) बना लेता है तो परमात्मा स्वयं ही उस गुरमुख पर कृपा करनी आरंभ कर देता है। परमात्मा का प्रेम ही गुरमुख की शोभा बन जाता है और वह गौरवान्वित व सम्मानित होता है:

लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥
सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥
कवन बनी री तेरी लाली ॥
कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥१॥रहाउ॥
तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥
तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥२॥
तूं सतवंती तूं परधानि ॥
तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥३॥
प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥
कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥४॥
(पन्ना ३८४)

चारों ओर जब माया ने अपना जाल फैला रखा है और अपनी प्रतिष्ठा, संपत्ति, शक्ति, सत्ता, रूप, जाति एवं कुल से स्थापित करने की अंधी दौड़ लगी है, ऐसे में कौन है जो अपनी शोभा सतिगुरु-परमात्मा की प्रेम-भक्ति में देख रहा है और शेष सारी बातों से विरत है? जो इन सब बातों से ऊपर उठ कर परमात्मा की प्रेम-भक्ति में रत है, गुरबाणी ऐसे गुरमुख को शिरोमणि मनुष्य मानती है।



दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-४७

अप्रतिम बलिदानी : कवि भाई केसो सिंघ भट्ट

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

कवि भाई केसो सिंघ भट्ट दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक प्रमुख दरबारी कवि था। यह उन भट्टों के वंश में से था जिनके सवैये श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मिलते हैं। यह बोहथ भट्ट का बेटा, कीरत भट्ट का पोता और भिखे भट्ट का पड़पोता था। कवि भाई केसो सिंघ का छोटा भाई देसा सिंघ और बेटा नरबद सिंघ दोनों दशमेश पिता जी की सेवा में ही थे। इन सभी ने दशमेश पिता के हाथों 'अमृत' छका था और 'सिंघ' सजे थे। यही नहीं, देसा सिंघ के पुत्र भीम सिंघ और अमर सिंघ भी गुरु-सेवा में ही थे। इस प्रकार कवि भाई केसो सिंघ भट्ट के पूर्वज और अगला परिवार, सभी दशमेश पिता और गुरु-घर की सेवा में रत थे।

भट्ट होने के निश्चित रूप से कवि भाई केसो सिंघ ने गुरु-स्तुति में बहुत-सी काव्य रचना की होगी, परंतु दुर्भाग्य से वो सब अब उपलब्ध नहीं हैं। कवि भाई केसो सिंघ के कुछ एक छंद ही उपलब्ध होते हैं जिनसे उनके गुरु-घर के प्रति प्रेम और दशमेश पिता के प्रति समर्पण का पता चलता है।

कवि भाई केसो सिंघ द्वारा रचित कुछ छंद उपलब्ध होते हैं जो उन्होंने गुरु-घर के प्रेमी व्यापारी भाई लखी राय के अकाल-चलाणे के समय गाये थे। भाई लखी राय भाई मनी सिंघ के ससुर थे। उनकी बेटी सीतो बाई भाई मनी सिंघ से ब्याही थी। कवि भाई केसो सिंघ उस समय के लिए कहता है :

सिमरि भट्ट तउ सतिगुर अपना,
धंन धउला गढ धरा।
हुकम हूआ सच्चे साहिब का,
लक्खी बढ़तीआ स्वर्ग सिधारा।

इसी प्रकार एक अन्य छंद में कवि भाई केसो सिंघ सतिगुरु को याद करते हुए कहता है:

सिमरु सुलतान हिरदे दे गिआन,
साहिब को करूं याद सतिगुर करो सहाइ।

कवि भाई केसो सिंघ मात्र कवि और विद्वान ही नहीं बल्कि योद्धा भी थे। गुरु साहिब के नांदेड़ में ज्योति-जोत समाने के बाद भी इन्होंने बाकी सिंघों के साथ मिलकर पंजाब में संघर्ष जारी रखा। बाद में ये बाबा बंदा सिंघ बहादर की मुहिमों में भी शामिल रहे।

अंततः मानवता के लिए संघर्ष करते हुए कवि भाई केसो सिंघ ने बेमिसाल शहादत प्राप्त की। बादशाह बहादुर शाह उन दिनों पंजाब में था। कवि भाई केसो सिंघ दुर्भाग्य से अपने छः साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गये। इसके बाद मुगल बादशाह के हुक्म से लाहौर के एक गांव अलोवाल के निकट इन सातों भट्टों को जमीन में गाड़ कर शहीद कर दिया गया। 'शहीद बिलास' में ज्ञानी गरजा सिंघ भट्ट-बाहियों के आधार पर लिखते हैं कि नौ कार्तिक संवत् १७६८ वि. (११ अक्तूबर, सन् १७११) को यह घटना हुई। कवि भाई केसो सिंघ के साथ शहीदी पाने वाले बाकी छः भट्ट थे--भाई देसा सिंघ, भाई नरबद सिंघ, भाई तारा सिंघ, भाई सेवा सिंघ, भाई देवा सिंघ और भाई हरी सिंघ।

इस प्रकार कवि भाई केसो सिंघ कलम और कृपाण दोनों से गुरु-घर की सेवा कर गये।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

ख़बरनामा

श्री गुरु रामदास मेडिकल संस्था ने विद्या तथा अन्य शोध-कार्यों में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं – जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २० अक्तूबर। सिक्ख जगत की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारा प्रबंध को सुचारु बनाने के साथ-साथ सिक्खी के प्रचार एवं प्रसार के अलावा विद्या के क्षेत्र में भी अहम कीर्तिमान स्थापित किए हैं। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के प्रबंध तले चल रही संस्थाओं में अकादमिक, इंजीनियरिंग तथा मेडिकल शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक संस्कारों को उजागर करने के लिए प्राथमिकता दी जा रही है। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज एवं रीसर्च के प्रबंधकों, स्टाफ तथा विद्यार्थियों द्वारा चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश-पर्व को समर्पित एक प्रभावशाली समारोह के दौरान एकत्र संगत को संबोधित करते हुए किया। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान द्वारा दर्शायी गुरमति जीवन-युक्ति मानव को जीवन के हरेक पहलू के प्रति सुचेत करती है। श्री गुरु रामदास जी द्वारा सहज-भाव, सिमरन, समर्पण और सहनशीलता जैसी निष्ठा से की जाती गुरु-घर की सेवा की महानता का वर्णन करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों एवं डॉक्टरों को अपने व्यवसाय में ऊंची एवं आदर्श भावना से सेवा करने की प्रेरणा की।

उन्होंने कहा कि श्री गुरु रामदास जी के नाम पर मानवता की सेवा के लिए चल रही इस संस्था का मेडिकल सेवाओं में बड़ा योगदान है। इसमें बिना किसी लाभ के उच्च कोटि की सेवाएं प्रदान की जा रही हैं जिसका जरूरतमंद लोग बड़े स्तर पर लाभ ले रहे हैं। इससे पहले उन्होंने अस्पताल के बच्चा-विभाग में किसी भी रोग से पीड़ित नव-जन्मे बच्चों के इलाज के लिए आधुनिक सुविधाओं वाली मशीनों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ट्रस्ट के सचिव स. जोगिंदर सिंघ ने भी संगत से गुरमति विचारें सांझी कीं। इस शुभ अवसर पर मेडिकल संस्था तथा ट्रस्ट के सदस्य एवं समूह स्टाफ उपस्थित था।

द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स अब अंग्रेजी माध्यम में भी किया जा सकता है

श्री अमृतसर : २ नवंबर। सिक्ख कौम की महान संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स में जिज्ञासुओं की पुरजोर मांग पर अब अंग्रेजी माध्यम भी शामिल कर दिया गया है। इससे पूर्व इस कोर्स को पंजाबी व हिंदी में ही करवाया जा रहा था। अब यह कोर्स पंजाबी-हिंदी के अलावा अंग्रेजी में भी किया जा सकता है। इस कोर्स की अंग्रेजी माध्यम की पुस्तक 'Study of the Sikhism', जो इस कोर्स के निर्देशक डॉ. जसबीर सिंघ साबर ने संपादित की है, को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने रिलीज किया।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस कोर्स के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मुख्य कार्य सिक्ख धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा-प्रणाली पत्राचार के जरिये सिक्ख धर्म की ज्यादा से ज्यादा जानकारी जिज्ञासुओं तक पहुंचाने के लिए यह कोर्स आरंभ किया गया है। उन्होंने

बताया कि शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा यह कोर्स जिज्ञासुओं को बिना किसी कीमत के नि:शुल्क करवाया जाता है। सारा खर्च शि: गु: प्र: कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा किया जाता है। इस अवसर पर कोर्स के निर्देशक डॉ. जसबीर सिंघ साबर ने बताया कि इस कोर्स में गुरबाणी, सिक्ख इतिहास, सिक्ख-स्रोत ग्रंथ, सिक्ख रहित मर्यादा, संसार के प्रसिद्ध धर्म, सिक्ख सभ्याचार, सिक्ख त्योहार, सिक्ख संप्रदाओं आदि के बारे में आरंभिक जानकारी दी जाती है। उन्होंने बताया कि अब तक लगभग दस हजार जिज्ञासु पंजाबी एवं हिंदी में सिक्ख धर्म के प्रति जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। चालू सत्र के दौरान लगभग आठ हजार जिज्ञासु पंजाबी, हिंदी एवं अंग्रेजी में जानकारी ले सकेंगे। डॉ. साबर ने यह भी बताया कि दाखिला लेने वाले विद्यार्थी १६ वर्ष से लेकर ९५ वर्ष तक की आयु के हैं, जिनमें स्कूल/कालेज के विद्यार्थियों के अलावा प्रोफेसर, प्रिंसीपल, डॉक्टर, हाईकोर्ट के वकील, बैंक अधिकारी, सरकारी कर्मचारी, व्यापारी आदि शामिल हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इन विद्यार्थियों में मात्र सिक्ख ही नहीं बल्कि गैर-सिक्ख भी बड़ी गिनती में शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इस कोर्स में पहला स्थान प्राप्त करने वाले को ७१०० रुपए, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को ५१०० रुपए तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को ३१०० रुपए की धनराशि का इनाम दिया जाता है।

नवंबर १९८४ के शहीदों की याद को ताजा करते हुए श्री अखंड पाठ साहिब करवाया गया

श्री अमृतसर : ३ नवंबर। नवंबर १९८४ में दिल्ली तथा भारत के अन्य शहरों में अल्पसंख्यक सिक्खों को हजारों की संख्या में शहीद कर दिया गया था। उनकी याद को ताजा करते हुए श्री हरिमंदर साहिब परिसर में स्थित गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबखश सिंघ जी में श्री अखंड पाठ साहिब का भोग डाला गया।

इस मौके पर जुड़ी संगत को मुखातिब होते हुए श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मान सिंघ ने कहा कि जनता अपनी वोटों द्वारा नुमाइंदे चुनकर अपनी जान-माल की रक्षा के लिए सरकार बनाती है, किंतु जब रक्षक ही भक्षक बन जाएं तो ऐसे देश का रब ही रखवाला है। २७ वर्ष पूर्व ऐसा ही एक दुखद घटनाक्रम इस देश में घटित हुआ था जब देश की आजादी में ८० प्रतिशत से भी ज्यादा कुर्बानियां करने वाली सिक्ख कौम को समय के सरकारी हाकिमों ने अपने नेतृत्व में कुचलकर उनकी नसलकुशी करनी चाही। जिंदा सिक्खों के गले में टायर डालकर हजारों नौजवानों, बुजुर्गों, बच्चों तथा महिलायों को शहीद किया गया। केंद्रीय सरकारें अब तक किसी भी दोषी या उनका नेतृत्व करने वाले उस समय के राजनीतिक अगुआ को सजा नहीं दे पाईं, बल्कि उनको तो वजारतें देकर निवाजा जाता रहा है। इससे सिद्ध होता है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में अल्पसंख्यक सिक्ख कौम के लिए कानून में भी भेदभाव किया जाता है। उन्होंने कहा कि हमें गुरु साहिब पर भरोसा रखना चाहिए। एक दिन आएगा जब ये कातिल तथा इनके नेतृत्वकर्त्ता न्याय के कटघरे में खड़े होंगे। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के उच्चाधिकारियों के अलावा समूह स्टाफ बड़ी संख्या में उपस्थित था।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२०११